BAAT NEHARUN…

BY CHANDRA PRABHAKAR

INDEX

1. हरि बल नहीं तुझे मैं पाँऊ। 1

2. अपनी-अपनी नियति यहाँ पर। 1

3. तुम्हारे हम प्रभु बालक। 2

4. प्रभु दुख दूर करो सब हमरे। 3

5. हरि बिन तरसत नयन हमारे। 3

6. कृपा करो तुम सुख के दाता। 4

7. कितने बनते कितने मिटते। 5

8. ताने बाने बुनते बुनते। 5

9. चाह तुम्हारे गीत गाऊँ। 6

10. तू सुने ना सुने है मर्जी। 6

11. मन अतीत क्यों नहीं भुलावे। 7

12. जग में कोई साथ न देवे। 7

13. कैसे आऊँ मग में काँटे। 8

14. मेरे खेवट तुम आ जाओ। 8

15. मन के सारे दुख दूर करो। 9

16. भज हरि भज हरि जहाँ रखे हरि। 9

17. मुझ पर कृपा करो हे ईश्वर। 10

18. अपना न कोई ठिकाना है। 10

19. आते है जाते इस जग में। 11

20. मोती से आँसू ढलके। 12

21. मन याद कर रहा जिनको तू। 12

22. हरि बिन चैन नहीं हम पावें। 13

23. हरि तुम को यह प्राण पुकारे। 13

24. हरि बिन कहाँ जगत में जाई। 14

25. ठोकर खाते उठते गिरते। 1526. जग को तारन यहाँ बह रही। 15

27. हमें देख लो हे करूणाकर। 16

28. इस ठगनी माया में पड़ते। 17

29. करूँ अर्चना नयन नीर से। 17

30. नयना रोवे तू नहिं आवे। 18

31. हरि तुम आन मिलो अब मुझसे। 19

32. करता मैं तुम को प्रणाम हूँ। 19

33. बीत जाये सारी उमरिया। 20 34. अन्धकार में दीप जला दो। 21

35. मन रे हरि को नाहि पुकारे। 22

36. ईश तुम्हारे गुण को गायें। 23

37. भक्त के क्या पास है जो। 23

38. ईश कृपा करना तुम मुझ पर। 24

39. आँसू को हमने चुना यहाँ। 25

40. ईश उड़े है मन यह मेरा। 25

41. चाह यही अब झड़ जायें हम। 26

42. हे ईश दया करना हम पर। 26

43. तुमने मुझ को अलग किया जो। 27

44. आँखों में नीर तड़फता है। 27

45. हम लुटते रहे लूटते तुम रहे। 28

46. सुख का सागर छिपा तुझी में। 28

47. हम जानते नहीं है। 29

48. प्रभु अर्चना स्वीकार कर लो। 29

49. इस जिन्दगी को समझते न हम हैं। 30

50. जो मैं समझा वह तू समझे। 3051. आने जाने की दुनिया में। 31

52. कितना जग में छलक रहा रस। 31

53. पूजना यहाँ शून्य को तुम। 32

54. मेरी सिसकी को तू सुन ले। 33

55. कौन साथ में यहाँ चला है। 33

56. बीतता सब जा रहा। 34

57. बालक हैं अज्ञान भरे हम। 35

58. यहाँ वहाँ डोले मन जग में। 35

59. प्रभु मिल जाओ तुम हमको। 36

60.. कितने गाये गीत ईश पर। 37

61. यादें तेरी हैं आती। 37

62. अपनी अपनी उलझन मन की। 38

63. मन की पीड़ा दूर न होवे। 39

64. मेरे जीवन तुझे खोजते। 39

65. तू इस पल को जी ले मनुआ। 40

66. तुम बिन मेरा मन्दिर सूना। 41

67. तेरी चौखठ् पड़ा रहूँ मैं। 41

68. ईश कृपा करना तुम हम पर। 42

69. हर सांस जीवन की दे दूँ। 42

70. नीर बह रहे कैसे पोछूं। 43

71. ले चल मुझे भुलावा देकर। 43

72. हम जायेंगे कित नहीं पता। 44

73. गीत उठता है हृदय से। 45

74. अंखियां नीर भरे पल पल में। 45

75. प्रियतम से प्रीति करूँ कैसे। 4676. दिल कांप रहा थर थर मेरा। 47, 48

77. दुख आये सह तप मन समझो। 49

78. पल दो पल की खुशी चाहते। 50

79. अन्धकार से जी घबराये। 50

80. निर्बल का न कोई यहाँ पर। 51

81. पिव-पिव रटे पिया ना दीखें। 51

82. सब रंगों के पार छिपा तू। 52

83. नाम तुम्हारा लिये बिना मै। 52

84. हरि बिन सुमरे जीवन बीता। 53

85. हरि भज हरि भज हरि भज पगले। 53

86. खोज रहे राह को। 54

87. पूजा करते तुम्हारी। 54

88. कोई ठगा जाता यहाँ। 55

89. दर्द तुमने जो दिये हैं। 55

90. पूजा तेरी करें प्रभु। 56

91. बीता जाता जीवन बसन्त। 56

92. अपनी अपनी इच्छायें ले। 57

93. खेल यह चलता रहेगा। 57

94. बह रहे आंसू हमारे। 58

95. चलता प्रभु जी चला न जाता। 58

96. मन भूल जा मन भूल जा। 59

97. ईश तेरी हो कृपा जब। 59

98. भजते प्रभु को हम है। 60

99. यह बीत गया सारा जीवन 61

100. कौन है पागल कौन स्याना। 61

101. आ जाओ राम। 62

1

हरि बल नहीं तुझे मैं पाऊँ, चादर मैली मैं शर्माऊँ।

कैसे कह दूँ अपने हिय की, रोऊँ हरपल नीर बहाऊँ।

दे प्रकाश तो ही चल पाऊँ, वरना भटक-भटक मैं जाऊँ।

अंखियां हैं चहुँ ओर निहारें, बिना कृपा भव तर ना पाऊँ।

कुछ पल जीवन के हैं बाकी, काहे तुमने देर लगाई।

विरह अग्नि में भस्म हुआ ना, यह भी मुझको है दुखदाई।

हारा थका शरण तेरी हूँ, दूर न कर कृष्ण कन्हाई।

बुझे दीप में ज्योति जला दो, तेरी पूजा ही मन भाई।

रोये नयना तू नहिं आवे, कैसे दिल की प्यास बुझावे ?

बनो न छलिया प्रियतम मेरे, काहे मुझको तू तरसावे ?

पाव पडूं मोहि न ठुकरावे, कुल यहाँ जीवन हो जावें।

जनम-जनम की प्यासी अंखियां, तुझ चरणों में नीर चढ़ावें।

ज्ञान नहीं अज्ञानी हूँ मैं, भूली इक कहानी हूँ मैं।

क्षमा करो ईश्वर तुम मेरे, तड़ रहे हैं हम इस जग में।

पाप पुण्य सुख-दुख दुनिया के, अपने-अपने खेल रचाई।

व्याकुल मनुआ इसमें उलझा, हुआ विवश प्रभु मुझे बचाई।

तुम बिन मेरा जीवन सूना, रह-रह आता मुझको रोना।

मुझे छोड़ छिप गये कहाँ तुम, ढूंढ न पाया तेरा कोना।

कर अनाथ ना दास बना लो, जीवन की बगिया महका दो।

तेरे निशदिन गुण गाते है, कटे रूर करुणा दिखला दो।

2

अपनी-अपनी नियति यहाँ पर, अपने-अपने पैमाने।

मन तू क्यों बेचैन रो रहा, कोई तेरी ना माने।

हरि चरणों में धयान लगा ले, दुनिया दो दिन का मेला।

समझ यहाँ थिर ना है कुछ भी, मत कर तू मन को मैला। यही सत्य बस वही सत्य है, लहर बना तू बहता जा।

जहाँ तुझे ले जाये नदिया, वश ना हरि गुण गाता जा।

इस नदिया में खेल खेल ले, भजन बिना नहीं चैन मिले।

छ्लर है कितना हम ना जाने, प्रीति बिना न ़ूल खिलें।

धयान ईश का सदा करो तुम, कभी न उसको विसराओ।

इन सांसों का वह ही मालिक, लगा सुरति तुम लग जाओ।

नौका पार करेगा वह ही, हम तो खेल खिलौने हैं।

दुख जब आता रो लेते हैं, जख्म दिखाते ़िरते हैं।

जप उसको तू प्रीति बढ़ा ले, पथ वह ही दिखलायेगा।

जन्म-मरण का चक्र चल रहा, भय से पार उतारेगा।

अंखियन बसा उसी मूरत को, जपे जिसे सब ताप मिटे।

जोगन हो गई मीरा बाई, महल छोड़ हरिनाम रटे।

हरि-हरि रट लो हरि में डूबो, और कहाँ पर जाना है ?

छूटा जाता सभी यहाँ पर, दुनिया रैन बसेरा है।

3

तुम्हारे हम प्रभु बालक, दया अपनी सदा रखना।

यहाँ हम भटकते भगवन, हमें पथ तुम दिखा देना।

यह प्यासा कंठ है मेरा, नयन से नीर गिरते हैं।

हरी मुझसे नहीं रुठो, विनय प्रभु तुमसे करते है।

तुही माता पिता सर्जक, जगत का तू नियन्ता है।

अंधोरे से बचा लो तुम, मेरा तू ही दीपक है।

नहीं आंखे खुले मेरी, तेरा दीदार न होवे।

जला दे विरह की ज्वाला, उसी में भस्म तन होवे।

मचलते नीर आंखो में, सहारा ईश तेरा है।

बहता जाता नदिया में, नहीं जांनू किनारा है। 4

प्रभु दुख दूर करो सब हमरे, आलोकित हमरा पथ कर दो।

बालक हैं नादान तुम्हारे, अन्धाकार का भन्जन कर दो।

दुखी हृदय को गले लगावे, भटक रहे जो इस जग अन्दर।

जीवन में हम ूल खिलावे, साथ रहे हम सदा निरन्तर।

मात-पिता तुम बन्धाु सखा हो, कभी न भूले ऐसा कर दो।

सदा अर्चना तेरी करके, जग के कष्ट हरें तुम बल दो।

जब-जब हम पर संकट आवें, साहस हमरा कभी न जावे।

तुम राजा सारे जग के हो, सुख सब तेरे जग में पावे।

यहाँ प्यार का पाठ पढ़े हम, घृणा भाव को दूर भगावे।

जीवन की अन्तिम सांसों तक, जग को सुन्दर खूब बनावे।

नाम धार्म का लेकर ईश्वर, ना आपस में हम टकरावें।

तुम्हीं हमारे पालक सर्जक, इस जग को तू खेल खिलावे।

ऐसी गंग बहा दो ईश्वर, प्यार यहाँ नित बढ़ता जावे।

दो पल के इस जीवन में हम, शुभ कर्मों को गले लगावे।

तुम ही पीड़ हरो प्रभु हमरी, हम भी सबकी पीड़ मिटावे।

बढ़े सदा तेरे गुण गाते, तुझ सम्मुख हम शीश नवावें।

5

हरि बिन तरसत नयन हमारे, ज्ञान दीप को ईश जला दे।

मिट जाये अँधियारा सारा, करूँ अर्चना मुझे प्यार दे।

अगम अगोचर पार न तेरा, बिन तेरे हैं नहीं सबेरा।

कटें नहीं यह काली रतियां, अपना ले मुझे दास तेरा।

दो पल का जीवन ले आये, मेरे जीवन के तुम स्वामी।

नहीं भुलाना मेरे माली, कृपा करो तुम अन्तर्यामी।

मेरी अंखियां बाट निहारें, जियरा मेरा भर-भर जावे।

छोड़ हमें तुम कहाँ छिप गये, इस जग में ना हमें भुलावे। जग की प्रीति सभी है झूठी, टूटी जाती सारी खूंटी।

तेरी यादों में खो जाये, पिला हमें तू ऐसी बूटी।

द्वारे तेरे खड़े हुए हैं, नजर उठा कर हमें देख लो।

प्रीति हमारी बढ़े निरंतर, दिल की बात हमारी सुन लो।

हरि-हरि जपे सदा इस जग में, दिल की बात हमारी सुन लो।

जीवन की मेरी पूजा हो, कभी न भटके कभी न विसरे।

मेरे सर्जक भूल न जाना, कभी नहीं मुझको विसराना।

अज्ञानी हम बालक तेरे, ज्ञानदीप तू हिया जलाना।

अन्धाकार से ढकी चदरिया, थर-थर कांपे मेरी छतियां।

दो प्रकाश तुझ तक चल आयें, रो-रो हारी मेरी अंखियां।

इस विशाल जग के आंगन में, प्रभु तू ही मेरा सहारा है।

छोड़ न देना मुझे भंवर में, रो-रो कर तुझे पुकारा है।

कृपा करो तुम सुख के दाता, जीवन तुम बिन है दुख पाता।

रो रो हार गई यह अंखियां, छिपे कहाँ हो भाग्य विधााता।

मेरे जीवन के ओ माली, दुख से बचा आंख में लाली।

नहीं और रक्षक है कोई, पिला हमें तू मधाु की प्याली।

BAAT NEHARUN..

चलते चलते जपते जपते, खो जायें तेरी यादों में।

तुम संभाल लेना हरि मुझको, ज्ञान नहीं है मेरे हिय में।

बालक हूँ बस क्षमा मांगता, अन्धाकार में यहाँ भटकता।

कैसे पाऊँ पथ मैं तेरा, कुछ भी मैं हूँ नही जानता।

रोता हूँ बस रो लेता हूँ, तुझे पुकारूँ प्रियतम मेरे।

मेरा जिया हुआ है व्याकुल, काटो सारे दुख के घेरे।

भटक रहा अनजानी दुनिया, नीर बहाती हरपल अंखियां।

पार लगा दो मेरी नैया, बीत रही कुछ पल की घड़ियां।

शरण मुझे तुम अपनी रख लो, जिय मेरा यह भर-भर आता।

दास तुम्हारा पांव पड़ता, पिता तुही है तुम ही माता। 7

कितने बनते कितने मिटते, लिये हुए कितनी गाथा जग ?

मेरा मन बैरागी है अब, नहीं लुभाता है रब यह जग।

हम तो तेरी करें प्रतीक्षा, नयनों में आंसू आते है।

जल ही जल चहुँ ओर दीखता, नहीं किनारा हम पाते है।

शरण तुम्हारी पड़े प्रभु हम, ज्योति जला तुम में देना।

अज्ञानी हम बालक तेरे, जान क्षमा प्रभु हमको करना।

तुमसे आशा भटक रहे हैं, मेरी प्रीति निभा तुम देना।

रो-रो अंखियां हार गई हैं, हमें सहारा प्रभु जी देना।

पाऊँ मैं हमको पथ देना, जगत विषय में ना उलझाना।

तेरे ही हरपल गुन गाऊँ, चाहूँ यादों में मिट जाना।

करो कृपा तुम शक्तिमान हो, तुम्हें झुकावें प्रभु हम माथ।

दुष्कर्मों से दूर रहे हम, सद्कर्मों में हमें दो साथ।

तुझ झलक मिले रि मिट जाये, हर ूल यहाँ पर खिल गिरता।

BY CHANDRA PRABHAKAR

सुर बजे हिया में तेरे ही, ना मिटने की हरि है चिंता।

8

ताने बाने बुनते बुनते, बीत गया यह जीवन सारा।

प्रीति बढ़ा ना पाये तुमसे, ईश जिन्दगी यह मैं हारा।

जीवन के तुम सुप्रभात हो, दया होवे तब प्रकाश हो।

हाथ जोड़ कर करूं वन्दना, हृदय न तोड़ो तुम आशा हो।

कटी पंतग उड़ता इस जग में, कहां जा रहे जानत नाहीं।

सकल सृष्टि का तुही रचियता, भावे तुम बिन कुछ भी नाहीं।

अँखियां नीर गिराये हरपल, बीत न जाये घड़ियां तुम बिन।

कृपा सिन्धु जग के रखवाले, लाज रखो मेरी भी तू सुन।

खोज रहे इस शून्य गगन में, कहां छिपे कर मन ना मैला।

तेरी बन्शी के स्वर सुनने, प्राण पुकारें आओ छैला। ९

चाह तुम्हारे गीत गाऊँ, पल भर को भी ना विसराऊँ।

जग में घिरे प्रलोभन कितने, हरि मन को ना मैं भटकाऊँ।

मेरे देवता तुम ना रुठो, अपने चरणों में रहने दो।

बहते नीर पुकारें तुमको, गिरता हूँ मैं तुम सम्बल दो।

तू ही मेरा सृजनहारा, पार लगा दो मैं हूँ हारा।

कंठमेरा अवरु) हुआ है, तुम बिन मेरा जीवन खारा।

दास बना लो ठुकराओ ना, कोई मेरा ठौर नहीं है।

कट जाये जीवन पतंग यह, तुम बिन मेरा मोह नहीं है।

सूखे ूल न आती पूजा, अंखियां रोवे तू क्यों रुठा ?

अपना तू पथ हमें दिखा दे, सारा जग यह लगता झूठा।

करो हमको स्वीकार प्रभु तुम, अंधियारा है कुछ ना सूझे।

तुम बिन ज्ञान नहीं पाऊँ मैं, कर कृपा मोहि सब कुछ सूझे।

10

तू सूने ना सुने है मर्जी, गीतों तुझे सुनाऊँ मैं।

जीवन का कतरा-कतरा दे, तेरे उपकार चुकाऊँ मैं।

मैं याद तुझी को कर रोता, मन भटक-भटक मेरा जाता।

कैसे यह बांधा बिठाऊँ मैं, जग दौड़ धूप में यह फिरता।

क्या देख रहे है जग में सब, है इन्तजार किसका करते।

आने-जाने की दुनिया में, हम पेट न अपना भर पाते।

तेरी दुनिया में मैं आया, दिल लगा नहीं इसमें पाया।

खोया-खोया सा घूम रहा, इस जग में मैं तो भरमाया।

आशाओं का लिये पुलिन्दा, भ्रमण सदा करते रहते हैं।

अन्त डूब जाती यह गगरी, ठौर कहीं ना पा पाते हैं।

माना गीत मधुर है तेरे, क्यों मुझको यह रास न आये ?

बना दीवाना फिरता हूँ मैं, हरदम तेरी याद सताये।

इस पार न रस का जाम पिया, उस पार न जाने क्या होगा ?

निशदिन झरती इन अँखियों का, अन्जाम न जाने क्या होगा? 11

मन अतीत क्यों नहीं भुलावें, प्रभु के गुन तू क्यों ना गावे।

इससे प्रिय कुछ नहीं जगत में, हिया विचार कर अमृत पावे।

दुख सब विसरे अनहद जागे, बीते रैना भोर होय तब।

मगन होय यह मनुआ नाचे, सुने दूर से वन्शी धुन जब।

पल दूभर बिन बन्शी की धुन, ऐसी प्यास हिया में जागे।

हरि-हरि तुझे पुकारे हरपल, प्राण होय मेरे बड़ भागे।

मेरी प्रीति बढ़ा दो मोहन, जानूं ना कर्मों के बन्धान।

अज्ञानी कुछ ज्ञान नहीं है, प्यारा लागे तुमरा सुमरन।

भरी धूप तपती धारती है, चैन नाम से ही मिलती है।

मनुआ भटक-भटक प्रभु जाता, ना हो निष्ठुर यह गलती है।

भीगे हरपल प्राण तुझी में, सभी चाह हो ईश विसर्जित।

सोवे जागे बस तुझमें ही, तेरी धुन सुन होऊँ फ्रुल्लित।

बीत जाये हमारा जीवन, प्राण तुम्ही जीवन के सर्जक।

अपने द्वार विठा लो मुझको, नीर गिरे मैं तेरा सेवक।

थक-थक कर मैं टूट चुका हूँ, बल ना मुझमें हार गया हूँ।

गीत तुम्हारे घट में उतरे, चंद चकोर प्रीति भूला हूँ।

ऐसी प्यास बढ़ा दे प्रियतम, प्यास तुम्हारी में खो जाये।

प्यास रहे मैं रहूँ न बाकी, तू सागर सा बस लहराये।

जग में कोई साथ न देवे, जाये मुझे तू भी भूल।

कहाँ टिकेगा यह दिल मेरा, दे रहा क्यों इतने शूल ?

देखो बालक हम तुम्हारे, ना अतीत का ज्ञान हमें।

रोती रहती मेरी आँखे, दे दे अपना प्यार हमें।

तुमको सुमरूँ दुख से छूटूं, हिय में जलती आग गमे।

बरसो बादल बनकर प्रभु तुम, मुँह न मोड़ो लखो हमें।

एक आस तुझ पर ही मोहन, भटक रहे इस जंगल में।

बहती जो आसूं की गंगा, पहुँचे तेरे चरणों में।

हम है अबल कांपता यह दिल, लाज यह मेरी राख लो।

मेरे जीवन के तुम पालक, डूब रहा हूँ संभाल लो।

कैसे आऊँ मग में कांटे, हरि तुम बिन जियरा नहिं लागे।

ज्योतिपुंज इस जग के स्वामी, करो कृपा तब दुख सब भागे।

सूर्य चन्द्र नभ में तारागण, सकल सृष्टि करती परिकर्मा।

कैसे पाऊँ प्यार तुम्हारा, फ़ल होय जीवन के कर्मा।

बहते आंसू दर्द तुम्हारा, तेरे बिन यह जीवन हारा।

मात-पिता गुरु बन्धु सखा तुम, बढ़े कदम तेरे दरबारा।

अगर अगोचर पार न तेरा, कर प्रकाश मेरे घट भीतर।

करो कृपा पाये चरणा रज, जन्म-मरण का छूटे चक्कर।

जीवन के आनन्द तुम्ही हो, थके प्राण के मीत तुम्ही हो।

छूटे जाते सभी सहारे, करो पार खेवट तुम ही हो।

डोल रही है मेरी नौका, बीच भंवर में डूब न जाये।

कर्मों की जंजीर में उलझा, भटकन से प्रभु हमें बचायें।

आंसू को मैं करता अर्पण, तुझे जपें कट जाये जीवन।

चाहूँ बसे रहो तुम हिय में, छूटे तो ही जीवन क्रन्दन।

मेरे खेवट तुम आ जाओ, नैया प्रभु डूबे पार करो।

कितने जन्मों से भटक रहे, करुणा के सागर दया करो।

हम शीश झुकायें यहाँ खड़े, सदियां बीती हम तड़ रहे।

तेरे इंगित पर नाचें सब, तू शक्तिपुंज न दूर रहे।

कठिन डगर है छिपा किधार है, तुझको बालक तेरे देखें।

नयनों से नीर गिरें झर-झर, बिन तेरे यह बगिया सूखे।

चाहत है प्यार मिले तेरा, मुरझाया ़ूल खिले जग में।

तम दूर हटे होवे प्रकाश, नाचे मनुआं तेरी धुन में।

डर लागे जिय कांपे मेरा, तुम रुठ नहीं मुझसे जाओ।

अज्ञान हरो तुम दया करो, प्रभु हमको कभी न ठुकराओ।

प्रभु तुझे समर्पित हो हरपल, जीवन की ज्योति जले जब तक।

हम विरह अग्नि में खूब जले, तू नहीं मिले हमको जब तक। 15

मन के सारे दुख दूर करो, हरि ओम जपो हरि ओम जपो।

दुख भंजक जग का है पालक, यह सृष्टि रचैया इसे जपो।

जग के तम में कुछ ना सूझे, हरि ओम जपो हरि ओम जपो।

देगा प्रकाश जीवन सर्जक, विश्वास लिये बस उसे जपो।

छूटे जाते जग के बन्धान, बस उसे जपो मन उसे लखो।

हरि ओम समा जाये दिल में, जग है सुपना कर जतन लखो।

बस एक सहारा यह जग में, जग नाते सारे कट जाते।

चहुँ ओर देखती नजरें यह, थक आंखों में आंसू आते।

उसके ही यहाँ खिलौने हम, नहीं अहंकार में सोंचो दम।

बस प्रीति बढ़े उससे हरदम, दुख जीवन के फ़िर होवे कम।

अन्दर-अन्दर हिय विनय करो, तेरी राजी में रजा रहे।

अज्ञानी हम तेरे बालक, मेरी अंखियों से नीर बहे।

तुम कृपा हमें अपनी देना, पथ को आलोकित प्रभु करना।

सद्‌कर्मों में हम बढ़े सदा, हिय मेरे सदा वसे रहना।

16

भज हरि-भज हरि जहाँ रखे हरि, भूल न जाना जप लेना हरि।

दुख के दिन सब कट जायेंगे, सुख सागर कहलाता है हरि।

मन बैचेन हुआ यह डोले, हरि बिन जपे कहीं न ठहरें।

प्रीति लगे यदि उस प्यारे से, घड़ियां जीवन की सब ठहरें।

चलता चल तू कित जायेगा, सागर लहराता सब दिश में।

BAAT NEHARUN..

डूब उसी में जहाँ रहे तू, अन्तस तेरे बसा सभी में।

लिये भटकते भूख प्यास हम, बिन हरि जपे मिले ना चैना।

नित आशाएँ लेकर जीते, मैं को छोड बहे हम क्यो ना।

सर्जक जिसको हम न जाने, रो रो शिशु बन उसे पुकारें।

आसूं तेरे पोछें वह ही, जप उसको यह जीवन सवरे। 17

मुझ पर कृपा करो हे ईश्वर, जन्म-जन्म से दास तुम्हारा।

इधार-उधार ठोकर खाता हूँ, भटक रहा तुझको खो हारा।

बस जाओ मेरे नयनों में, पल भर भी तुम विलग न होना।

मेरे जीवन के तुम धान हो, रुठो ना मेरी सुन लेना।

पुष्प तेरा अज्ञानी हूँ मैं, उर में कंट लगे घायल हूँ।

मुझे उबारो हे करुणाकर, तुझ कृपा का मैं भूखा हूँ।

तुमको विसरा कर दुख पाया, जीवन में आनन्द न आया।

सावन भी पतझड़ सा बन कर, मेरे जीवन को झुलसाया।

कदम-कदम पर देखूँ तुमको, तेरी आहट को मैं तरसू।

बनो न निष्ठुर मेरे ईश्वर, नैना चाहे पग पर बरसूं।

तुम बिन कौन सुनेगा जग में, बन अनाथ मैं घूम रहा हूँ।

किन कर्मो ने बांधाा मुझको, जो मैं अब तक भटक रहा हूँ।

जग के स्वामी सुनो हमारी, हरपल हम रोते रहते है।

कैसे रंग भरुँ जीवन में, सपने सब ओझल होते हैं।

तू बन जाये मेरा खेवट, पार करुँ इस भव सागर को।

रुठ गया मेरा बसन्त है, अंखियों से सींचू मैं इसको।

तुम छिपे कहाँ अब आ जाओ, तुम और न मुझको तड़ाओ।

हम जी न सकेंगे तेरे बिन, अंखियां ढूंढे अब मिल जाओ।

BY CHANDRA PRABHAKAR

पल-पल में आंसू बहते हैं, बस नाम तुम्हारा लेते हैं।

ना विलग कभी मुझसे होना, अरदास यही बस करते है।

18

अपना न कोई ठिकाना है, जाने न हम कहाँ जाना है।

बस नाम तुम्हारा ले चलते, इस दुनिया में बह जाना है।

रंगीन उतरते है सुपने, हम मृगमरीचिका में भटके।

बिन नाम तुम्हारे चैन नहीं, जग में दुख ही दुख के झटके। इस इन्द्रधानुष सी दुनिया में, हरपल यह जीवन ढलता है।

गाता जब तेरे गीतों को, मानो बसन्त लहराता है।

जीवन के क्षण बीते जाते, तू मेरी प्यास बढ़ा देना।

कठिन डगर है आस सही पर, ना इसे कभी बुझने देना।

देखे कितने ही ख्वाब यहाँ, आंसू बन कर बह-बह निकले।

यादों में तेरी नीर बहे, देता जा तू सब कुछ ले ले।

गा-गा कर मीरा धान्य हुई, सुधिा राधाा ने अपनी खोई।

कर मुझे अभागिन ना मोहन, जग के सुपनों में मैं खोई।

तुझ द्वार पड़े ना हटा मुझे, बस तू ही मेरी आशा है।

मन को धाोये आंसू मेरे, कुछ और न तुमसे मांगा है।

बरसें आंसू रिमझिम मेरे, हिय में मेरे तुम बस जाओ।

सांस-सांस में जपूं तुझे मैं, तुम आओ चाहे ना आओ।

जीवन में चल-चल हार गया, नत मस्तक हूँ तुझ सम्मुख मैं।

हरि तेरी मैं करुँ अर्चना, बस प्यार तुम्हारा चाहूँ मैं।

सब कुछ दीन्हा मुझे जग में, पर प्यार नहीं पहचान सका।

मफ़ मुझे प्रभु कर देना तुम, मैं तम अपना ना काट सका।

BAAT NEHARUN..

आते हैं जाते इस जग में, पल दो पल का है सब मेला।

ना जाने कित कब्र बनेगी, बनते फिरते हम है छैला।

द्वार तुम्हारे प्रभु खड़े हैं, तुझे पुकारे हम रोते हैं।

कहाँ छिप गये हमें छोड़कर, क्यों इस दुनिया में जीते हैं ?

नमन करो स्वीकार हमारा, जीवन को तू देने वाला।

तुमको छोड़ कहाँ पर जाये, मूंद न आँखे ओ मतबाला।

कांपे पग साहस ना मुझमें, आँसू से भीगे हैं नगमें।

सर्जक मेरे तुम ना रुठो, तुम बिन कुछ भी नहीं जगत में।

खिलते फूल यहाँ झड़ जाते, मिलते यहाँ विलग हो जाते।

सुख-दुख का यह खेल बनाया, चाह यही हम तुमको पाते।

क्षमा करो प्रभु बालक हैं हम, अज्ञानी है निर्बल है हम।

पार लगा दो नौका मेरी, शरणा तेरी आन पड़े हम। 20

मोती से आंसू ढलके, दुख की रचना करते।

चोटों पर चोटें खाते, पल-पल जीवन गिनते।

आजादी सब ही चाहें, जीवन में क्यों घुटते ?

मारग को कौन दिखाये, दुख को हरपल सहते।

हर सांस जपे बस तुमको, हरपल तुमको तकती।

इस दुख से कौन बचाये, जाये नदिया बहती।

रोती अंखिया बस देखें, केवट तुम ना बनते।

शिकवा जीवन में किससे, तुमसें हम हैं कहते।

क्या आशा ले जीयेंगे, तेरे बिना भटकते।

ढलता सूरज देख रहे, खाली झोली फिरते।

रुठो न ईश्वर हम बालक, अज्ञान लिये घट में।

BY CHANDRA PRABHAKAR

कैसे पायेंगे मन्जिल, ढका हुआ कुहरे में।

साहस दे चलते जायें, लय हो जायें तुझमें।

आंसू यह गीत सुनाएँ, तुम बिन कुछ ना घट में।

21

मन याद कर रहा जिनको तू, वह बिछुड़ चुके हैं इस पथ पर।

यादों की गठरी सिर पर रख, तू नीर बहाता क्यों झर-झर ?

सृष्टि खेल शाश्वत चलता, मिलतें हैं और बिछुड़ जाते।

यह आँख मिचौनी खेल-खेल, जीवन पूरा सब कर जाते।

सुख-दुख के झटके खा-खा कर, हम रोते कभी यहाँ हँसते।

अनबूझ पहेली जीवन की, निशदिन इसमें फंसते रहते।

जीवन के तार हुए ढीले, स्वर नहीं निकलते इनमें अब।

ऐसे बदरंगी जीवन को, देखूँ ना कुछ कह पाऊँ अब।

प्रियतम पीड़ा में छोड़ मुझे, जग अन्धाकार में लुप्त हुआ।

कड़वाहट जग की पीने को, वह छोड़ अकेले विलग हुआ।

इसी सृष्टि के निर्माता तुम, कैसा तुमने खेल रचाया ?

हँसने रोने की दुनिया में, कैसा जीवन यह भरमाया।

धाक-धाक दिल करता है मेरा, थर-थर पग मेरे कांप रहे।

जीवन की बस इस संधया में, ईश तुम्हें ही पुकार 22

हरि बिन चैन नहीं हम पावे, अंधियारें में ज्योति जलावे।

आलोकित मेरा पथ कर दो, तुझ चरणों में नीर चढ़ावे।

मूरख है अज्ञानी हैं हम, चाह प्रभु जी तेरा सहारा।

इस दिल का अब बोझ न उठता, हे करुणाकर मैं हूँ हारा।

कैसे हे प्रभु तुझको पायें, इस जीवन को सफल बनायें।

मेरे जीवन धान आ जाओ, रो-रो नयना गीत सुनाये।

जग की बतियाँ हमें न भावें, जिया मिलन को है ललचावे।

रुठो ना प्रभु जी तुम मुझसे, कंठ मेरा यह भर-भर आवे।

खोजूँ कहाँ खोज ना पाता, ना तोड़ो प्रभु मुझसे नाता।

जन्मों से मैं भटक रहा हूँ, पग-पग पर मैं ठोकर खाता।

मेरा जीवन यह उदास है, कोयल कूके ना डाली पर।

चल-चल कर मैं हार गया हूँ, किरपा करो हे करुणाकर।

टेढ़ी जग पगडण्डी पर चल, जीया हरपल ही घबराये।
प्रीति न तोड़ों मुझसे निष्ठुर, तुम बिन बता कहाँ हम जाये।

आंसू यह स्वीकार करो प्रभु, चरणों से ना दूर हटाओ।

बीतेंगे यह पल जीवन के, मेरे नैनन में बस जाओ।

23

हरि तुमको यह प्राण पुकारे, रिमझिम बरसे नयन हमारे।

कहाँ खो गये इस मेले में, पी-पी रटे तुझे बस टेरे।

जिय लगे ना मोहिं कुछ भावे, तुझ मिलने की आस लगावे।

दीप जलादो मेरे मोहन, ना अनाथ कर मुझे जलावे।

माना हम अज्ञानी ईश्वर, फ़िर भी हम संतान तेरी हैं।

हमसे ना प्रभु होना निष्ठुर, नहिं हमें फ़िर कोई जगह हैं।

हम सेवक हैं तुम हो स्वामी, लाज रखो प्रभु सदा हमारी।

जीवन के सब दुख मिट जायें, आंख उठाकर देख मुरारी। तेरी कृपा प्रभु मिल जाये, अन्धाा देखे गूंगा गाये।

तरस रही हरि मेरी अँखियां, बंजर धारती यह लहराये।

हरि तुम बिन जियरा ना लागे, दर्शन पाऊँ कैसे तुमरे।

दो दीपक नयनों के जलते, तेरी हरपल राह निहारे।

लहरों में मैं डोल रहा हूँ, कभी मुझे मिल जाये मंजिल।

आंसू की लड़ियों को देखो, टूट गया है मेरा यह दिल।

पलकों में मैं तुझे छिपाऊँ, नहीं विलग तुझसे हो पाऊँ।

मेरे प्रियतम मुझे न छोड़ों, विनती बार-बार दुहराऊँ।

24

हरि बिन कहाँ जगत में जाई, दया करो तुम बनो सहाई।

थकें नयन पथ देखें तेरा, डर लागे यह दिल घबराई।

सुन ले सुधि तुम क्यों विसराई, रतियां जागूं नींद न आई।

जिय रोवे न रुठ गुंसाई, दास प्रभु मैं पुकार लगाई।

सूरज नित प्रकाश ैलावे, नित देखूं पर तू न आवे।

बेदर्दी तुम बनो न प्रियतम, तुम बिन क्यों न जियरा जावे।

लाज रखों मैं दर्शन पाऊँ, हरि बिन चैन कही न पाऊँ।

चरण पडूं मैं नीर बहाऊँ, सुन विनती न अनाथ कहाऊँ।

मात-पिता गुरु स्वामी तुम हो, इस जग के तुम ही सर्जक हो।

अपना दर्द कहें हम तुझसे, जागो प्रभु तुम क्यों सोते हो ?

पथ न जानू रात अन्धोरी, कैसे कटे जनम की ेरी।

हिय में मेरे दीप जला दो, लाज रखो ना कर तू केरी।

छूटा जग में सब कुछ जाता, तुम ना तोड़ों मुझसे नाता।

हिय में ईश्वर तुझे बसाये, पार करुँ भव ना घबराता।

कदम-कदम पर ठोकर खाते, प्रभु निशदिन हम तुमको भजते।

प्रीति बढ़ाओ मेरे स्वामी, झर-झर नीर नयन से झरते। 25

ठोकर खाते उठते गिरते, बीत गया यह जीवन सारा।

मिटा जा रहा हूँ मैं ऐसे, मिटे भोर का जैसे तारा।

नहीं पहेली सुलझा पाये, अँखियां हरदम नीर बहाये।

भटक रहे हम सुख की खातिर, पीड़ नहीं पर हिय की जाये।

कितने आंसू यहाँ बह रहे, लगा जाल को राह तक रहे।

दुई का भान हिय में जब तक, पाप पुण्य सब हमे ठग रहे।

दुई न जाये जीवन जाये, ओझल हरपल होता जाये।

कैसा चक्र चल रहा जग में, ना कोई इससे बच पाये।

भूख-भूख सब ओर भूख है, छीना झपटी खूब शोर है।

चली जा रही देख उमरिया, जाने ना हम क्या मुकाम है।

सुख दुख लेकर जग में भटके, दया करो हे देव हमारे।

करुणा पाने को जी तरसा, नहीं जी सकें बिना तुम्हारे।

दीपक हिय में ईश जला दो, सद्कर्मों में सदा चले हम।

इस थोड़े से जीवन में प्रभु, ना भूले गुणगान करें हम।

बहते आंसू को तुम लख लो, अज्ञानी हूँ ईश जान लो।

तेरी हम ना जाने लीला, अपनी शरण हमें प्रभु रख लो।

26

जग को तारन यहाँ बह रही, गंगा तू सुन लेना।

;षी मुनी तट करे अर्चना, सारे ताप मिटाना।

हरे ताप सब शीतल होवें, हरि से मोहि मिलाये।

जग के सुख-दुख से थकता हूँ, नयना मेरे रोये।

ना गरीब ना कोई राजा, सबको गले लगाया।

भेद नहीं कछु तूने कीन्हा, यहाँ हरि सुमरे पाया।

कर न सकूं मैं तेरे बयना, मिला हरि मोहि चीना।

पतित तारनी हरपल बहती, चाहूँ तेरा कोना। हम बार-बार स्तुति करते हैं, मेरी गंगा मैया।

रोम-रोम में हरी बसे हैं, मिला मुझे तू सैंया।

भय हरन सुखदायिनी माता, जीवन तुमसे आता।

प्यास मिटाये जग की माता, जड़ चेतन हर्षाता।

विष्णु चरण से बहकर निकली, मुझे वहीं पहुंचाना।

तेरे जल को पान करें हम, हरि का प्यार बढ़ाना।

बैरागी बन हरि में खोऊँ, मेरे ताप मिटाना।

शीतल तन मन सब हो जाये, प्यार तुम्हारा पाना।

हरि-हरि करते धयान धारें हम, छोड़ू गम मैं सारे।

तेरे साये में ही जी कर, हरि को प्राण पुकारे।

अन्तिम तेरा मिले बिछौना, हरि में हो यह नयना।

फल हमारा जीवन होवे, कहत बने ना बैना।

27

हमें देख लो हे करूणाकर, अँखिया हरपल नीर बहावें।

तुम बिन जियरा यह नहिं लागे, बता कहाँ को हम हरि जावें।

तेरी ज्योति जलाये हिय में, तब सुख उपजे मेरे घट में।

हार गया हूँ हे हरि हर मैं, संबल दे चरणा पाऊँ मैं।

इतना ज्ञान कहाँ से लाऊँ, जो इस मन को मैं समझाऊँ।

उबल रही जो मन में पीड़ा, अमी समझ उसको पी जाऊँ।

हम निर्बल रो रो कर पूछे, जग में आये तुझ मर्जी से।

कर्मपाश में बंधो हुए हम, निकल न पाते इन घेरों से।

विनय सुनो मेरी जगदीश्वर, जीया मेरा आता भर भर।

दया सदा दिखलाते रहना,फुकारें हरपल हैं बिषधर।

चल न पायें तुम संभालना, मत झोली को गले डालना।

दबे हुए निज की पीड़ा से, दुख मेरे ना भास कराना।

तेरे ही गुन गाते गाते, पार करें यह जीवन नदिया।

हरो नयन के आंसू प्रभु जी, रो रो तुझे बुलायें 28

इस ठगनी माया में पड़ते, तुमको विसरा जग में भूला।

मृगमरीचिका मोह न टूटा, निशदिन हमको लगते शूला।

पार लगा दो मेरी नौका, खेवट बन जाओ प्रभु मेरे।

हम अज्ञानी राह न जाने, तुमको मेरे प्राण पुकारें।

मेरे जीवन के सर्जक तुम, हमको तड़ाते क्यों हो तुम।

करो शान्ति हिया में वर्षा, भीगें प्राण तुझी में हरदम।

दुख-सुख के तुम खेल खिलाते, छिपे कहाँ तुम नहीं बुलाते।

हार गया तेरी लीला से, सूखे आंसू नीर न आते।

ठुकराओ मत हम बालक हैं, तू सारे जग का पालक है।

अन्धियारा पथ सूझे कुछ न, दीप जला दो हम रोते है।

लहरें डोल रही सागर में, अपनी-अपनी लिये कहानी।

तेरी कहानी हिय समाये, मिट जाये रि सब नादानी।

नमन करो स्वीकार हमारा, बहे खूब आंसू की धारा।

तुम बिन जीवन बगिया में, ूल खिले ना दुख ने मारा।

अगम अगोचर पार न तेरा, भटक रहा मैं मनुआ बौरा।

भान संग हो जाये तेरा, मिट जाये जीवन का घेरा।

29

करुँ अर्चना नयन नीर से, भवसागर से पार लगावे।

तेरे गुन गाऊँ मैं हरदम, जगत कींच में नहीं ंसावे।

मेरे दाता मेरे स्वामी, कैसे अपना हिया दिखावे ?

BAAT NEHARUN..

जाता जीवन खिला न उपवन, कैसे मन को धीर बंधावे ?

तुझ नगरी का पथ ना जानूं, भटका बहुत ईश दुख पाऊँ।

कर्मों की जंजीर से जकड़ा, मुक्त नहीं इससे हो पाऊँ।

दास तुम्हारा मुझे बचा लो, अन्धियारा मोहि सूझे ना।

जनम-जनम से भटक रहा हूँ, अब तक तुमको मैं पाया ना। रिमझिम-रिमझिम आंसू बरसे, बाट निहारुँ तू कब रीझे ?

मेरे तो आनन्द तुम्ही हो, होऊँ फ्रुल्लित जब तू रीझे।

हम है अबल परीक्षा मत लो, तुझ मन्दिर में बस रहने दो।

तुमको सुमरन कर सब भूलूं, झर-झर आंखों को झरने दो।

जग में आया कहाँ छिप गया, मेरा सारा चैन खो गया।

करो न वंचित निज ममता से, दे दो मुझको अपना साया।

भटकाओं ना द्वार पड़े हैं, झोली खाली नीर गिरें है।

अपना लो करुणा के सागर, तुमसे मेरी यही विनय है।

नयना रोवे तू नहिं आवे, कैसे मन की प्यास बुझावे ?

कर-कर जतन यहाँ मैं हारा, तेरे बिन कछु नहीं सुहावे।

बहें यहाँ न कोई किनारा, चल-चल कर मैं प्रभु जी हारा।

कृपा तेरी मिले तो स्वामी, फ़िर बीतेगा यह पथ सारा।

इस मन को कैसे समझाऊँ, बस तेरा ही धयान लगाऊँ।

पाप पुण्य सुख-दुख दुनिया में, हो असहाय नहीं छुट पाऊँ।

ज्ञानदीप हे ईश जला दो, मकसद जीवन का समझा दो।

छोटे से जीवन में प्रभु जी, गाये हम गुण प्रभु जी वर दो।

करुणा के सागर हो प्रभु जी, दुख का दरिया क्यों बहता है ?

हारे ;षि मुनि धयानी सारे, मनुआ तो रोता रहता है।

BY CHANDRA PRABHAKAR

सुख की बूंद छिपी तुझमें ही, बस इसको तुम ही वर्षा दो।

अंसुअन की गंगा में बहते, पार करो या चाहे डुबा दो।

जाने नहीं अर्चना विधि को, हम अबोधा बालक है प्रभु जी।

शरणागत हम आन पड़े हैं, हमें संभालो हे ठाकुर जी।

सृष्टि तुम्हारी गीत गा रही, हे ईश्वर हम सुन न पाते।

यहाँ कुचक्रों में पड़-पड़ कर, हाय तुझे हम विस्मृत करते।

पथ दो पथ दो भीख मांगते, खाली झोली राह ताकते।

ऐसे विवशता की चक्की में, नहीं हमें क्यों प्रभु तारते।

अश्रु करो स्वीकार हमारे, हमरे कुछ भी पास नहीं है।

कैसे तुम्हें मनाये प्रभु जी, यह अपनी सामर्थ नहीं है। 31

हरि तुम आन मिलो अब मुझसे, मिलने को यह जियरा तरसे।

तुम बिन हरि यह जीवन सूना, हरपल मेरी अंखिया बरसे।

खोजा तुमको खोज न पाऊँ, पल-पल तेरी आस लगाऊँ।

नाचूं गाऊँ तेरे आगे, जीवन का आनन्द मनाऊँ।

पल-पल जाये नहीं तुम आये, अंखियां झर-झर नीर बहाये।

बने हुए कैसे निर्मोही, पथ मिलने का कौन दिखाये।

रुठे तुम हम किससे रुठे, बार-बार तुझको ही देंखे।

करुणा के सागर कहलाते, तुम बिन मो कछु और न दीखे।

नैना रिमझिम-रिमझिम बरसे, तुमको मिलने को यह तरसे।

ना हो बेदर्दी सांवरिया, पतझड़ बीते सावन बरसे।

कसक कलेजे की ना जाने, तुम बिन बता कौन पहचाने ?

चरणों में गिर रो लेने दे, मिट जायें सारे अफ़साने।

तुम बिन सम्बल और न मेरा, कर अनाथ न दुख ने घेरा।

किरपा तेरी होवे स्वामी, मिट जाये जीवन का ेरा।

हाथ जोड़ कर खड़ा हुआ हूँ, मुझको छोड़ न देना भव में।

हरि तू अब तो मुझको लख ले, डूबेंगे हम तुम बिन मग में।

32

करता मैं तुमको प्रणाम हूँ, सांस-सांस में तुम्ही राम हो।

लाज रखो हे तुम मन भावन, जीवन का संगीत तुम्ही हो।

तुमको कहाँ-कहाँ ना ढूंढा, तुम बिन मेरा जीवन सूना।

ज्योति जला दो मेरे हिय में, जगमग हो जीवन का कोना।

मैं सेवक तुम स्वामी मेरे, हरपल प्राण तुझे ही टेरे।

ना प्रभु मुझको तुम विसराओ, जग के दुख हमको है घेरे।

तुम दाता पर झोली खाली, पुण्य बटेरुँ कैसे माली।

पीड़ा के बहते सागर में, जाये ना आंखों की लाली। मेरे जीवन धान प्रभु तुम हो, बिछुड़े तुम कैसे गम कम हो।

अन्तर्यामी घट की जानो, चाहूँ दया कभी ना कम हो।

अंधियारा डर मोहि लागे, भावे तेरे बिन कुछ नाहीं।

थर-थर मेरा जियरा कांपे, थाम मुझे ले ओ निर्मोही।

धूप दीप नैवैद्य चढ़ाऊँ, हरपल हूँ मैं तुझे मनाऊँ।

रि क्यों मुझसे रुठे प्रियतम, तुम्ही बता दो मैं कित जाऊँ।

झर-झर बहते आंसू मेरे, चाहे पग धोवें यह तेरे।

कैसे तुझको हाय पुकारुँ, बस जाओ तुम हिय में मेरे।

33

बीत जाये सारी उमरिया, बजा-बजा कर यह इकतारा।

सुनूँ गाऊँ तेरे गीत को, नयनों से बहे अश्रु धारा।

जीवन की सारी आशायें, तुझ चरण में आये सिमट कर।

BAAT NEHARUN..

रोये अंखियां याद तुझे कर, यही चाह मेरी वन्शीधार।

रंग बिरंगी इस दुनिया में, न भटकाओ मुरली मनोहर।

तेरी छवि नैना बस जाये, मैं मांगू तुझसे यह ही वर।

प्राण पुकारें तुमको हरदम, तुम बिन जीवन भी क्या जीवन।

सांस-सांस में रम जाओ प्रभु, विनती मेरी सुन लो भगवन।

जीवन के है रंग अनेंको, अपनी-अपनी समझ बनी है।

आंसू बरसे रिमझिम मेरे, जीवन की सब सि)ी तू है।

भरे न जीया रो लेने दो, गीतों को प्रभु गा लेने दो।

डूबूं मैं तुझ वन्शी सुर में, कुछ पल इनको न खोने दो।

तुम बिन कृपा न पूजा तेरी, आस कर रहे बहुत घनेरी।

दूर न तुम अपने से करना, रोती अंखियां है बेचारी।

अज्ञानी मतिमन्द मूर्ख हूँ, फि भी तेरे बालक हम है।

ज्ञान दीप हिय में दर्शा दो, ना प्रभु हममें कुछ भी बल है।

कट जायें यह सारी रतियां, तुझे पुकारुँ बस सांवरिया।

चल-चल कर मैं हार चुका हूँ, अपनी छांव बिठा ले रसिया।

स्वीकार करुँ तेरी चाहत को, न विरोधा कभी मन में आये।

डूबा रहूँ सदा तुझमें ही, जीया मेरा डर-डर जाये। 34

अन्धाकार में दीप जला दो, पथ मिलने का तुम दर्शा दो।

रो भी सका न तुझ चरणों में, मेरा तुम यह दन्श मिटा दो।

पीड़ा के सागर में बहते, किन कर्मो के फ्ल को लेते ?

अब भी मुक्त हुए न इनसे, सुधिा मेरी तुम क्यों ना लेते ?

मुझे अनाथ करो न स्वामी, प्रभु हरपल मैं भजता जाऊँ।

कदम-कदम पर जियरा डरपे, कैसे मैं इसको समझाऊँ ?

BY CHANDRA PRABHAKAR

BAAT NEHARUN..

भटक रहा चहुँ ओर जगत में, बता तुझे मैं कैसे पाऊँ ?

इन रोती अँखियों में प्रभु जी, मैं चाहूँ बसा तुझे जाऊँ।

घटते जाते यह जीवन पल, कहाँ छिपे मेरे जीवन धान।

हार गया हे मेरे स्वामी, करो कृपा अब मेरी भी सुन।

आंसू की झड़ियाँ तो देखो, अन्तस के क्रन्दन को निरखो।

बता पुकारें कैसे तुमको, मेरे जीवन धान तुम बरसो।

सुख-दुख आये नहीं भुलायें, जीवन नौका बहती जाये।

भूल भुलैया में प्रभु जी पड़, हम तुझको ना कभी भुलायें।

दो दीपक नयनों के जलते, पथ निशदिन वह किसका तकते।

अनजानी पगडण्डी देकर, प्रभु जी तुम क्यों मुझसे छिपते ?

विरह गीत मैं गाता फिरता, मन को मैं समझाता फिरता।

जग भंवर में डूब जाऊँ कब, नहीं किनारा कोई दिखता।

कर्मों की जंजीर बंधी है, आदि अन्त की कौन कड़ी है ?

पाप पुण्य में उलझा मुझको, कैसी रचना ईश करी है ?

तेरे ही गुण को मैं गाऊँ, तो ही इस भव से तर पाऊँ।

टूट गये है सभी सहारे, करो कृपा मैं तुझको पाऊँ।

तेरी चौखट पर बैठा हूँ, मुझको सदियाँ बीत गई हैं।

आये ना तुम मेरे साजन, आंखों से बरसात हुई है।

निष्ठुर न बनो तुम क्षमा करो, तुमने ही मुझको उलझाया।

अनजान डगर पर छोड़ मुझे, तुम छिपे कहाँ मैं घबराया।

हर पल आंखे ढूंढे तुझको, है चुभन नहीं तुझको पाया।

है तपस लिये दिल सुलग रहा, क्यों मेघ न तूने बरसाया। मैं नहीं तपस्वी रोता हूँ, अज्ञान लिये मैं जीता हूँ।

कर्मों का जाल यहाँ फैला, ना निकल हाय मैं पाता हूँ।

BY CHANDRA PRABHAKAR

हे ईश कृपा कर पथ दे दो, अज्ञान हमारा तुम हर लो।

यह भटक रहा जग में मनुआ, भटकन को हे प्रभु जी हर लो।

पल दो पल का है यह मेला, समझाता मन कर न मैला।

याद उसी को कर चलता चल, बिगड़ा जाता है सब खेला।

जपते ही रहे नाम तेरा, कट जाये यह पथ वर देना।

आंखों के मोती चुगो नहीं, पर नजर उठा कर लख लेना।

35

मन रे हरि को नाहि पुकारें, जग में हर क्षण ठोकर खावे।

प्रियतम बिछुड़ा नीर बहावे, चैन हिया को कबहुं न आवे।

जीवन नदिया बहती जाये, किन सुपनों में खोती जाये।

हरि से विमुख हुआ पागल मन, कौन पीड़ तेरी लख पाये।

उठती लहरें खूब हिलायें, अब तक नहीं समझ कुछ पाये।

हरि वियोग ने किया वाबला, जाते यह पल रुदन मचाये।

अपने-अपने खेल-खेल कर, सब ही खो जायेंगे जग में।

हरि तुम मुझसे कभी न रुठो, विधि दर्शा दो पाये मग में।

तुम कुछ कह दो जिसे सुनूँ मैं, पीड़ा को तज तुझे वरुँ मैं।

हार गया अब चल ना पाता, दया करो तो तर जाऊँ मैं।

सुख को खोजे सभी घूमते, लगते दंश सभी है रोते।

करुँ जतन तुझको ना पाऊँ, रोये नयन समझ नहिं पाऊँ।

चरण पडूं तू प्रीति जगा दे, यहाँ वहाँ मोहि न भटकावे।

जीवन में इक तू ही आशा, अन्धाकार में दीप जलावे।

अज्ञानी हूँ बल कुछ नाहीं, रात अंधोरी दीखे नाहीं।

कृपा करो तुम मेरे ईश्वर, दूँ पुकार दे दे अब राही।

जग में उलझा मन ना सुलझा, तपी न धारती मेघ न बरसा।

विरह अग्नि से दूर हाय हरि, जला उसे नयनों को बरसा। 36

ईश तुम्हारे गुण को गायें, इस जग में मन को बहलायें।

कहीं न लागे मेरा जीया, तुमको कैसे ईश मनायें ?

चल-चल हारे तुझे न पाया, मेरा जीवन यह शर्माया।

नहीं परीक्षा मेरी प्रभु लो, मैं भटका प्रभु तेरी माया।

हरि मोहि मिलो धुन यह लागी, बना हुआ हूँ मैं बैरागी।

चहुँ दिश में मैं तुमको खोजूं, पीड़ हिया में हे हरि लागी।

देखत-देखत थके नयन यह, आये अब तक नाहीं सजना।

हे हरि मेरी सुधि को ले लो, नीर गिरे पर ताप मिटे ना।

हम है अबल सहारा दे दो, जीवन का कुछ मतलब दे दो।

अज्ञान तिमिर में भटक रहे, अपनी करुणा को वर्षा दो।

थर-थर पग यह मेरे कांपे, दीखे न तू डर मोहि लागे।

कैसे प्रीति बढ़ाऊँ तुमसे, करो नहीं तुम हमें अभागे।

ूल खिले िरि मुर्झाते हैं, भाग्यवान तुझे भजते है।

दो पल जीवन ज्योति जला दो, हरपल भजें याद करते हैं।

मेरे खेवट भूल न जाना, भव से मुझको पार लगाना।

मेरे सर्जक पांव पड़ा हूँ, प्रभु तुम मुझको ना ठुकराना।

37

भक्त के क्या पास है जो, दे सके भगवान को।

जो खुद भटकता राह में, मांगता है दान को।

अबल हम तुम सबल हो प्रभु, पालक तुम्ही जगत के।

भटकते अज्ञान में हम, भण्डार तुम ज्ञान के।

तुम्ही सर्जक प्रभु हमारे, दूर ना हमको करो।

तुम्हारी बगिया में खिले, महकें ऐसा करो।

आंखों से पानी बहता, न कोई भी पिघलता।

इस जग में ऐसे टूटे, कर रहम दिल डूबता। नीर यह गिरते नयन से, फ़िर हुए ओझल यहाँ।

दुख हमको जायेगा ले, ना हुए तेरे यहाँ।

दीप तुझ सम्मुख जलावे, नीर हैं यह गिर रहे।

मिले हमको झलक तेरी, फ़िर न चाहे हम रहे।

डाल दे तू पुष्प माली, झोली खाली न रहे।

नित बने तेरे दिवाली, ना कमी कोई रहे।

नमन हम करे तुम्हें हैं, हमें स्वीकार कर लो।

देखो नयनों के आंसू, चाह है प्यार कर लो।

38

ईश कृपा करना तुम मुझ पर, अपने साथ सदा रखना।

छोड़ मुझे तू कभी न देना, मुश्किल तुम बिन है जीना।

हम तो बालक प्रभु तेरे है, तुझे निहारे हम हरदम।

मेरे हिय में तुम बस जाओ, गये कहाँ मेरे हमदम।

वन्शी की धुन हम सुनने को, तरस रहे हैं हे भगवन।

सुनकर मिट जाये दुख सारे, महके जीवन का उपवन।

तुझे खोजते खो जाये हम, यह चाहत हिय में मेरे।

आंसू गिरते रहे नयन से, हटे न हम पथ से तेरे।

चलते ही हम जाये मग में, गीत तुम्हारा ही गाये।

स्वामी तुम सारे जग के हो, हम तुमको शीश नवायें।

नयनों में छवि बसी तुम्हारी, हमको लगती है प्यारी।

कितनी ही मुश्किल हो मग में, भूले न तुम्हें मुरारी।

इन सांसों में तुम्ही बसे हो, प्राण तुम्हें ही पुकारें।

हमको भूल नहीं तुम जाना, प्रभु हम हैं दास तुम्हारे।

कैसे तुझे रिझाऊँ ईश्वर, नहीं जानता मैं विधि को।

रो-रो कर बस यह कहता हूँ, प्यार करुँ बस मैं तुमको।

कर्मों की डोरी में बंधाकर, इस दुनिया में चलता हूँ।

तुझे बसाये इस दिल में प्रभु, इन्तजार को करता हूँ।

तेरा प्यार सदा ही बरसे, यह विनती तुमसे प्रभु है।

चाहूँ नहीं और मैं कुछ भी, मेरा तू ही सब कुछ है।

39

आंसू को हमने चुना यहाँ, खोये तुझमें क्यों नहीं पता।

सूखे ना नीर हमारे यह, डर लगता है कुछ नहीं पता।

हम शीश झुकाये यहां खड़े, कर्मों के बंधान यहाँ कड़े।

तुझको खोजूं कैसे खोजूं, नयना तुमसे हैं ईश लड़े।

झरती अँखियां सुख दे जाती, किस निर्जन में फिर छिप जाती।

पत्थर दिल का मैं भार लिये, चलती मग में ठोकर खाती।

हम भूल सकें ना ईश तुम्हें, डूबे तुझमें ना चाह रहे।

पिव-पिव की लागी प्यास रहे, बरसात न हो ना हमी रहें।

देखो हमको तो नजर उठा, पापों से जीवन हाय सना।

कैसे मैं पूजा करुँ तेरी, मैं मतिमन्द हूँ अज्ञान घना।

40

ईश उड़े है मन यह मेरा, पावे ना कहीं बसेरा है।

पिव को भूला जग में लिपटा, होता तब नहीं सवेरा है।

BAAT NEHARUN..

चल हारा तुझे न पाया, इस जग में हरपल भरमाया।

बुझते जाते यह दो दीपक, निज को तुझमें डुबा न पाया।

पल-पल भटकू पथ न सूझे, क्षमा मांगता नयना रोवे।

डगमग डोले नैया मेरी, केवट बन कर क्यों न खेवे ?

ले चल ले चल पार गगन के, तुझ बिन जग में गीत चुभन के।

अंधियारे में डूब रहा सब, हारा तन यह बिना दरश के।

नयना रोवे वह नहीं आवे, जिय प्यास न कोई मिटावे।

इस दुनिया में हुआ बावला, नहिं प्रकाश की किरन दिखावे।

दिशाहीन हम घूम रहे हैं, खो तुझको हम तड़ रहे हैं।

कैसे पाऊँ विधि न जानू, अंसुओं में हम डूब रहे हैं।

अज्ञानी हम पथ दर्शा दो, मिटे तुम्हीं पर विरह जगा दो।

कर्मों का क्या दोष हमारा, जीवन की पीड़ा सुलझा दो।

BY CHANDRA PRABHAKAR

41

चाह यही अब झड़ जायें हम, बनी यहाँ डाली भी दुश्मन।

किसकी अब मन करे इन्तजा, लगा हमें प्रभु जी कैसा घुन ?

सुन्दर बगिया ूल खिले है, ठूठ हुए पर हम न झड़े हैं।

आशा किसकी करें यहाँ पर, बेबस हम लाचार हुए हैं।

मेरे मांझी ले चल अब तो, चाह नहीं दुख में जीने की।

थके यहाँ कर सके न कुछ भी, नहीं हमें है सुधि अब तन की।

भंवरे िरे न देखे मुझको, अपनी पीड़ा कहूँ मैं किसको ?

अन्तर्यामी नाम तुम्हारा, जानो तुम इस अन्तर्मन को।

करो कृपा हे मुरलीधार अब, है पतझड़ ना आंसू सूखा।

तू भी ईश्वर मुझसे रुठा, कैसे पाऊँ रस सब सूखा।

42

हे ईश दया करना हम पर, हम भटक रहे हैं करुणाकर।

अज्ञान तिमिर ना हटा सके, आंसू गिरते है बस झर-झर।

सुधि मेरी ले लो जगदीश्वर, अवरु) हुए हैं सारे स्वर।

आंखे देंखे तुम क्यों रुठे, बोलो मेरे हे प्राणेश्वर।

जग में नीरस जीवन लेकर, हम भटक रहे चहुँ ओर प्रभु।

क्यों मेघ नहीं बन कर बरसो, जाये कहाँ बोलो हे प्रभु।

सामर्थ नहीं तुझको पाऊँ, बस विलख-विलख मैं रह जाऊँ।

हे नाथ परीक्षा को मत लो, मैं निपट मूढ़ ही कहलाऊँ।

चलता हूँ थर-थर पग कांपे, तुम बिन जियरा यह ना लागे।

हम डूब रहे हैं भंवर बीच, तुम दूर करो हम पग लागे।

जगती के उजले में आये, क्यों अन्धाकार में भरमाये।

ऐसी भी हमरी करनी क्या, दीदार बिना जियरा जाये।

पूजा मेरी स्वीकार करो, अज्ञानी हम तुम क्षमा करो।

तुम ज्ञान किरन की ज्योति जगा, असमंजस सारे दूर करो।

तुमने मुझको अलग किया जो, मिलना तुझसे मैं ना चाहूँ।

रहूँ भटकता जनम-जनम भर, बस जी भर-भर रोना चाहूँ।

भर दे इन आँखों में पानी, गीत तुम्हारा निशदिन गाऊँ।

जीवन की सब अभिलाषायें, इस सागर में सदा डुबाऊँ।

अपना-अपना भाग्य यहाँ है, अपने-अपने है पैमाने।

किस-किस से हम करें शिकायत, कोई माने या ना माने।

चलते रहना चलते रहना, बल हो तब तक बस है चलना।

सृष्टि का संदेश यही है, चलते ही चलते है मिटना।

बिछुड़े है ना कभी मिलेंगे, चक्र चलेगा सदा तुम्हारा।

खो जाऊँ बस खोऊँ भगवन, दे दो बस आँसू की धारा।

44

आँखों में नीर तड़ता हैं, खो जाने दो इसको प्यारे।

हम रोयेंगे बस रोयेंगे, हमको बस रोने दो प्यारे।

दिल मेरा आज उचटता है, आँखों में नीर बरसता है।

अब छोड़ मुझे तुम भी जाओ, न साथ कोई अब मेरा है।

व्यथित हुआ कविता लिखता, आंसू भी झर-झर गिरते हैं।

पूछ रहा लड़ियों से यह मन, किस अनन्त में मिलते है ?

कविता के स्वर मौन हुए सब, लिखे समझ कुछ भी ना आता।

झर-झर अश्रु की गंगा में, डूब रहा यह तो जग सारा।

आँखों में पानी आता है, क्षण में होता हूँ उदास।

क्यों लाता हूँ, क्यों आता है, मैं देख पहेली हो उदास।

अन्धाकार ही अन्धाकार था, जीवन के जब कठिन क्षणों में।

ठोकर पर ठोकर खा कर मैं, रह जाता था उस क्षण में।

मैं देख रहा दुनिया की गतिविधिा, झलक रहे आँखों में आंसू।

कौन प्यार किसको करता है, नीर तड़ता दिल किसको दूँ। 45

हम लुटते रहे लूटते तुम रहे, हम रोए बहुत जुल्म तेरे सहे।

सुपने सुहाने दिखाते रहे तुम, घाव को सहलाते पीड़ित है हम।

आँख मीचे तेरे पीछे चलते, अन्धाी गलियों में हम तो भटकते।

कैसा है तू क्या तेरा रुप है, यहाँ जिन्दगी से क्यों खिलवाड़ है ?

हमें तू सजा दे रहा क्यों प्यारे, कैसे बता ;ण तेरा हम उतारे ?

खा-खा के ठोकर मैं गिर रहा हूँ, विष को अमी मैं समझ पी रहा हूँ।

रोये नयन यह दवा कौन डाले, हाय विवश क्यों यह दिन रात साले।

तेरी कृपा बिन न जीना यहाँ है, कुहरे ने सब कुछ छिपाया हुआ है।

चलते हैं हम तो चलते रहेंगे, नजरें तुझी से लड़ाते रहेंगे।

कुहरे में चलते इसमें समाना, कठपुतली हम ना अब तू रुलाना।

46

सुख का सागर छिपा तुझी में, ना तेरे बिन ठौर यहाँ है।

कितना भटको अन्त तुझी में, तेरे बिन वीरान जहाँ है।

बिना तुम्हारे तड़पे जीया, सकल सृष्टि में गान तुम्हारा।

द्वार तुम्हारे ईश्वर आया, तू ही सबका पालन हारा।

अनहद तेरा कभी रुके ना, सांस-सांस में बसे रहो तुम।

हरदम डूबे प्राण रहें यह, सदा सुने बन्शी की धुन हम।

दास बना लो मुझको अपना, हरपल तुमको सदा मनायें।

मेरे जीवन की आशा हो, तेरा प्यार सदा हम पाये।

कर दो खेवट मोहि पार तुम, तेरी प्यास अनोखी साजन।

नभ में भर जाये ज्यों बादल, वरस जाये तन भीगे प्रान।

डूब जाऊँ न भंवर बीच में, कैसे रीझे विधि ना जानूं।

अरदास सुनो प्रभु जी मेरी, तुमको अपना सब कुछ मानूं।

तेरी यादों में ही खोकर, सुनूं सदा तेरी ही मैं धुन।

ऐसी आग लगा दे हिय में, नहीं रुके फिर कभी अगन। 47

हम जानते नहीं हैं, अच्छे है या बुरे है।

बस बैठकर कर दर पर, आंसू बहा रहे हैं।

हम आते कहाँ से, चले जा रहे कहाँ है ?

जाने नहीं यहाँ कुछ, हाय गर्व में सने हैं।

कैसे तुम्हें पाऊँ, इस दिल को मैं दिखाऊँ।

जगत मरीचिका यह, जल ढूंढू रेत पाऊँ।

अँखिया नीर देकर, इस दिल में पीड़ देकर।

ईश्वर छिप गये तुम, जलते विरह को लेकर।

हारे ;षि-मुनी सब, हारे है ईश हम भी।

रुठो नहीं स्वामी, हैं दास तेरे हम भी।

सुनो अबल-सबल तुम, रक्षा हमारी करना।

बस जाओ नयन में, इससे ना दूर हटना।

48

प्रभु अर्चना स्वीकार कर लो, बहता नयनों से यह जल।

तुम कृपा से चलते है हम, ईश हममें कोई न बल।

माता-पिता मेरे तुम्हीं हो, क्यों रुका हमसे हुए हो ?

हम ढूंढते फिरते तुम्हीं को, छिप गये तुम किस जगह हो ?

हम है अबल बालक तुम्हारे, तुम हमें ठुकरा न देना।

इस कंठ में कुछ स्वर नहीं हैं, झरते यह हमरे नयना।

तुम ज्योति को पथ में जलाना, ना हमें तुम भूल जाना।

हम बढ़ रहे तुझ और प्रभु है, तुम हमें ना दूर करना।

अज्ञान में हम भटकते है, याद हरपल कर रहे हैं।

हे ज्ञानपुंज संभाल लेना, तू न विसरे डर रहे हैं।

गिरते हम चरणों में तेरे, चाह तू अब प्यार दे दे।

डगमगा रही मेरी नौका, पार अब इसको लगा दे। 49

इस जिन्दगी को समझते न हम है, दुखों के सागर यहाँ कम न गम है।

उबारो तुम्हीं बस तुम पर नजर है, बिना तेरे मन न कोई उमंग है।

जो भी दिये गम प्यारे है गम भी, मनाते रहे सदा तुझको हम भी।

प्यार है ही तुझसे न कोई गिला, मर्जी संभालों हमें नहीं गिला।

समाई हुई मेरी आँख तुझमें, जीवन की हर सांस आबाद तुझमें।

जीवन ना जाये क्यों तेरे बिना, रहा मुझसे जाये न तेरे बिना।

दिल में दुआयें आँख में आंसु ही, जिधार देखूं नजर आओ तुम ही।

घायल हूँ मैं तो ना होना खफा, कसम है तुम्हें तुम न करना गिला।

तेरी सजायें होती है सजदा, मिलना तुझी से करेंगे न शिकवा।

रुठे हो तू ही बता मेरी गलती, आँखें निहारे यह आँख न थकती।

सूनी डगर है राहें यह देखें, कभी तो मिलोगे नहीं और देखें।

तुझे प्यार करते-करते रहेंगे, तू बन शमा हम पतंगा बनेंगे।

50

जो मैं समझा वह तू समझे, जग में यह नहीं जरुरी हैं।

पीड़ा से ग्रसित हुआ जीवन, धीरज दें नहीं जरुरी है।

शोषित होता कोई जग में, हम मूक बने रह जाते है।

कथनी-करनी का अन्तर कर, निज को धोखा हम देते है।

इस पार देखता सब ीका, उस पार देखता मन तू क्या ?

इस पार नहीं उस पार नहीं, तू डूब शून्य में है यह क्या ?

सृष्टि नाचती इस शून्य में, सृजन-विसर्जन इसमें होता।

तारागण भी खेलें इसमें, बीज वृक्ष भी इसमें होता।

हुआ तृषा से पीड़ित मनुआ, खोज रहा सुख की चाहत को।

बिजली कड़के मग रुक जाये, फिर भी चलना है जीवन को।

जर्रा-जर्रा घूम रहा है, आँख उठाओ इसी शून्य में।

चलते-चलते तुम खो जाओ, निज को तुम दो इसी शून्य में।

BY CHANDRA PRABHAKAR

माँ का प्यार मिलेगा इसमें, शान्ति इसमें पाठ मिलेगा।

रंग बदलती इस दुनिया में, छिपा खजाना यहाँ मिलेगा। 51

आने जाने की दुनिया में, सब रचते अपना स्वांग यहाँ।

ना स्वांग समझ पाया अपना, भूला तुमको न बसा यहाँ।

चाहत मेरी हुई न पूरी, क्रूर नियति ने गोटी खेली।

बना हुआ तू मुझ पर निष्ठुर, खेल रहा मैं दुख की होली।

पल-पल परिवर्तित यह जीवन, रोए क्यों है चलना जीवन।

धूप छांव का खेल यहाँ है, कुहरे में छिप जाता जीवन।

रोए किसने देखे आंसू, सब खुशी मिटी मजबूरी में।

इस भूल भुलैया में पड़कर, विसराया तुमको इस जग में।

मैं चाहूँ थामो हाथ मेरा, चल सकूँ जगत पगडण्डी पर।

सूना-सूना सा मैं रिता, क्यों रुठे तुम हे जगदीश्वर ?

मैंने गाये गीत मिलन के, क्यों तुझसे मैं रहा बिछुड़ता ?

जन्म-जन्म का प्यासा क्यों मैं, ले अतृप्त मैं प्यास भटकता।

कैसे मैं मन धीरज दूँ, बैचेन हुआ डोले प्रतिपल ?

आशाओं की लकड़ी थामे, सब बीत रहा ना अब हलचल।

भूली विसरी यादों को ले, मैंने मन अपना बहलाया।

नित आशाओं की जोत जगा, मैंने प्रभु तुझको विसराया।

कर सको क्षमा तो कर देना, चल सका नहीं तुझ पथ पर मन।

देखा सूरज पर भूल गया, क्यों भटक रहा मेरा तन मन।

52

कितना जग में छलक रहा रस, पर जियरा यह तड़ रहा है।

नीरस मेरा यह घट क्यों है, रोता दिल यह पूछ रहा है।

प्यार बिना यह जियरा तड़े, बंजर धारती फसल न उपजे।

रो-रो कर रह जाती आंखे, तुझे मिलूँ मैं प्यार न उपजे। कितने सावन बीत गये हैं, गीत सुना ना हम रोये है।

ऐसे निर्मम ना हो मुझ पर, चरण धाो सके नीर झरे हैं।

भूख प्यार की हिया बसाये, खोज रहे जो गले लगाये।

मिला न ऐसा प्रियतम हमको, जियरा तड़-तड़ रह जाये।

सतरंगी जग रंग बिखेरे, टूट सके न दुख के घेरे।

सूनी अंखियां तुझे निहारें, छिपे कहाँ जग के रख बारे।

तुझको पा मैं आंख न खोलूं, मेरे नैनन में बस जाओ।

जीवन के सब रंग तुम्ही हो, ईश्वर मेरे हिय समाओ।

दया तुम्हारी जो मिल जाये, जनम-जनम के दुख मैं भूलूं।

रीता घट रस फिर भर जाये, मिले चरण मैं उसको छू लूं।

द्वार पड़ा मैं झोली खाली, सुनो प्रभु जी मेरी कहानी।

तुमको खो मैं भटक रहा हूँ, हिय में पीड़ आँख में पानी।

पूजना यहाँ शून्य को तुम, शून्य ही बन जाओ तुम।

विचर कर इसी शून्य में ही, देखते सभी जाओ तुम।

शून्य फैला सभी जगह है, है खेल सब उसका यहाँ।

जब तप्त धारती यहाँ होती, बादल बरसते है यहाँ।

छुपा बीज में शून्य देखो, कौन पथ पर है विचरता ?

यहाँ रंग कितने ही बिखेरे, अनगिनत यह रुप धारता।

है चल रहा अविराम यह तो, ना जानते वह क्या वरे ?

कौन सी चाहत को ले, निज रुप यह सृजन करें।

हम खोजते ही फिर रहे हैं, खोज भी क्या है हमारी।

BAAT NEHARUN..

चलते-चलते थक गये हैं, फिर भी न उतरी खुमारी।

जोड़े तूने जितने रिश्ते, टूटता सभी से नाता।

सभी शून्य का ही खेल है, शून्य क्यों हो नहिं पाता।

बहो लहर बन शून्य में तुम, यही तुझे ले जायेगी।

हो जा समर्पित शून्य में, यह अर्चना कहलायेगी। 54

मेरी सिसकी को तू सुन ले, जीवन में तू अब कुछ कर दे।

रोता हूँ मैं विलख-विलख कर, तू अब प्यारा गीत पढ़ा दे।

धार्म-अधार्म ज्ञान से वंचित, करुँ समझ कुछ भी न आता।

ज्ञान का अब तू पाठ पढ़ा दे, पाप पुण्य मैं नहीं जानता।

कैसी मेरी नियति हुई है, खोजूँ तुझको खोज न पाऊँ।

हाय हमारी राह बता दे, जीवन में रस घोल न पाऊँ।

अब तू निष्ठुर मुझे बता दे, चलना चाहूँ चल नहीं पाता।

कैसा बन्धान ले कर आया, उड़ना चाहूँ उड़ नहीं पाता।

ऐसे निष्ठुर जीवन को दे, जग से तुम उपहास उड़ाते।

गीतों की तुम चीख न सुनते, जग में काहे मुझे नचाते ?

स्वार्थप्रिय मेरी आशा को, कुछ टुकड़ा दे मुझसे बोलो।

जीवन का कुछ मतलब खोलो, आंसू देखो कुछ तो बोलो।

कभी मिलेंगे तुम से हम भी, तुझको रोते सदा रहेंगे।

देखों न देखो तेरी मर्जी, बहते हम बहते ही रहेंगे।

खोया खोया सा होकर मैं, बुद्धिहीन हो जग में घूमा।

नीरस हूँ मैं दुख में डूबा, जीवन का ना मतलब सूझा।

होकर मैं विक्षिप्त घूमता, आँखों के आंसू ना जाने।

क्यों न अब तो गले लगा ले, तेरी दुनिया को तू जाने।

BY CHANDRA PRABHAKAR

55

कौन साथ में यहाँ चला है, आते है सब जाते है।

कितनी अँखियां नीर बहाये, नहीं हाय रुक पाते है।

आशाओं के महल टूटते, उनको बचा नहीं पाते।

नीर भरे नयनों को लेकर, किस किसकों है हम लखते।

साधाक बन पथ पर चलता जा, लड़ना है तूफानों से।

खेल-खेल ले इस जीवन में, अर्धा चढ़ा दे अंसुवन से।

होता जा जगदीश समर्पित, अपने पथ पर चलता जा।

जग की इन टेढ़ी राहों पर, उसके ही गुण गाता जा। नियति खेल में हुए बाबले, घूमे हम मतबाले बन।

हमको कोई हाय थाम ले, ना थामे कोई तुम बिन।

अर्धा चढ़ाऊँ तेरे दर पर, इसको तुम स्वीकार करों।

घायल होकर तड़फ रहा हूँ, अब मेरा उ)ार करो।

सभी जगह है राज तुम्हारा, फिरता मैं दर-दर मारा।

तुम क्यों मुझसे रुठे ईश्वर, चल-चल कर मैं हूँ हारा।

रिमझिम-रिमझिम अँखियां बरसे, तेरे आने को तरसे।

अंधियारी रातों में खोजू, जीया एक किरण तरसे।

सूनी-सूनी आँख हुई यह, आये तुम हे ईश नहीं।

पल दो पल की घड़ियाँ बाकी, बीत न जाये शाम कहीं।

56

बीतता सब जा रहा, कुछ पल यहाँ।

तू सुमर हरि को सदा, जाना वहाँ।

खेल कुछ क्षण का यहाँ, ना देर है।

बह रही गंगा यहाँ, ना जोर है।

दर्द है बिखरा पड़ा, भन्जक वही।

उस बिना इस जगत में, कुछ भी नहीं।

जप उसे जब तक चले, यह सांस है।

टूट जाये कभी भी, नहिं हाथ हैं।

देखकर रंगी सुपन, जग में रमें।

टूटते फिर यहाँ पर, देखे गमें।

किसको समझाये नहिं, समझे यहाँ।

निज को समझाले हम, कम न यहाँ।

मिलो प्रियतम से यहाँ, तू गीत गा।

वह हो निर्मोही दिल, उससे लगा।

कर शिकायत ना यहाँ, आंखे वहाँ।

खेल सब उसका यहाँ, जाना वहाँ। 57

बालक हैं अज्ञान भरे हम, टूटी नौका नहीं किनारा।

तुम हो जग के सृजन करता, संकट पार करो मैं हारा।

जन्म-मरण का चक्र चल रहा, जीने का संघर्ष चल रहा।

कैसे पाऊँ ईश तुझे मैं, इच्छाओ का दास बन रहा।

अपने अपने जख्म यहाँ हैं, बहती क्यों है इतनी पीड़ा ?

निज पंख लिये उड़ता हरपल, बाजे कैसे जीवन वीणा ?

बहते आंसू बहते जाते, क्यों रोक उन्हें न हम पाते ?

आदर्शों की होली में जल, हम ठगे स्वयं है रह जाते।

चहुँ ओर मचा है शोर यहाँ, सब भाग रहे कित मंजिल है।

कैसे जीवन में सुमन खिले, मनुआ तो गम में पागल है।

तेरी अराधाना कर न सके, कोलू के बैल बने जग में।

ना जान सके क्या लक्ष्य लिये, आये तेरे सुन्दर जग में।

चलना चाहा पर चल न सके, तेरे चरणों मे रो न सके।

हम विवश हुए कितने जग में, भटके तुझ तक हम आ न सके।

तू जो चाहे वह ही होता, मूरख जान क्षमा कर देना।

तेरी रहमत का प्यासा हूँ, नजर उठा कर तुम लख लेना।

भटक रहे हम सृष्टि बीच में, नहीं किनारा कोई लगता।

नजर चुरा ना लेना मुझसे, दूभर है जीवन का रस्ता।

58

यहाँ वहाँ डोले मन जग में, जीया चैन कहीं ना पाये।

सुनूँ तुम्हारी वंशी धुन को, मन यह मेरा आस लगाये।

मैं अनजान नहीं कुछ जानूं, रोवे अंखियां तुझे पुकारुँ।

तुम हो करुणा के सागर प्रभु, नीर गिरे मैं चरण पखारुँ।

बालक हम तुम तो हो पालक, तेरी ओर निहार रहे हैं।

जग की संकरी पगडण्डी पर, सम्बल तेरा मांग रहे है।

अज्ञानी हम सूझे कुछ ना, दर्द कलेजे किससे बूझे ?

काली रैना हमें डरावे, दे प्रकाश हमको भी सूझे।

द्वारे तेरे आन पड़े हैं, पार लगा देना तुम भव से।

नैया मेरी डूब रही है, रुठो ना हे प्रभु तुम हमसे।

सृष्टि रचैया शक्तिमान हो, इस सांस के प्राण तुम्ही हो।

करो विनय स्वीकार हमारी, जीवन के धानधाम तुम्हीं हो।

रोवें अंखियां तुझे पुकारें, कैसे इस दिल को बहलावे ?

इसे मेले में मिला न कोई, जिसको अपना दर्द सुनावें।

कर्मों की जंजीर में जकड़े, सभी बोझ से अपने टूटे।

प्रीति डगर को भूल गये वह, ठगनी माया सबको लूटे।

करो कृपा प्रभु पार लगाओ, मेरे खेवट तुम बन जाओ।

तुम बिन पार लगे ना नैया, सुधि मेरी तुम ना विसराओ।

59

प्रभु मिल जाओ तुम हमको, तुमको खोजे हम भगवन।

चरण की धूल मिल जाये, फल होवे यही जीवन।

हमें वरदान तुम दे दो, न विछुडोगे कभी मोहन।

खिवैया बन के नैया के, बचा लो डूबते मोहन।

जगत में मैं भटकता हूँ, अन्धोरा दूर करो तुम।

सागर तुम हो करूणा के, दया तुम्हारी चाहे हम।

मुश्किल कितनी भी आयें, डगर तेरी न छोड़े हम।

यहाँ जिव्हा जपे तुमको, नहिं फिर कोई भी हो गम।

आनन्द घन तुम हो श्याम, यह दुनिया पूजे तुमको।

तुम्ही निर्बल सहारे हो, यह अंखिया खोजें तुमको।

न खाली हाथ हम जायें, मेरी झोली खाली है।

अनेकों रंग डूबा जग, तेरे दर पर लाली है।

अज्ञानी तेरे बालक, क्षमा ईश्वर हमें करना।

न खो जाये अंधोरे में, प्रभु दीपक जला देना।

मरूस्थल सा हिया मेरा, न हरियाली कहीं दीखे।

तड़ते प्राण मेरे है, मेरी खो जाती चीखें।

यह गिरे नीर धारती पर, तुझे है खोजते खोते।

जगे यह भाग्य प्रभु मेरा, हमें तुम क्यों नहीं लखते।

कितने गाये गीत ईश पर, रि भी तुमको मैं क्यों भूला ?

भूल रहा पर चैन न पाऊँ, लगे जगत के हमको शूला।

इतनी बंजर धारती दी क्यों, बूँद नहीं पानी की ठहरे।

ूल उगे नहीं मरुस्थल में, बिन तेरे ना जीवन संवरे।

सदा चरणों में बैठे, निशिदिन तेरी ही प्रीति बढ़े।

सांसों की सरगम में गूँजे, बस तेरा ही प्रभु रंग चढ़े।

थका यहाँ कुछ भी न पाया, खोकर तुमको सभी गंवाया।

झलक हमें तेरी मिल जाये, जीवन में मिल जाये छाया।

प्यारी दुनिया बरस रहा रस, तड़ रहा मनुआ क्यों बिन रस।

प्यारे रसिया रास रचाओ, जिसमें बरसे तेरा ही रस।

सोवें जागे जीवें तुझमें, कट जायें पल प्यारे-प्यारे।

तुझ चरणों में रहे समर्पित, तुमको मेरे प्राण पुकारे।

61

यादें तेरी है आती, रात दिन दिल को जलाती।

हार दी यह जिन्दगी सब, तुझ बिना कुछ ना सुहाती।

प्यार से झांका तुम्हें जो, मुझसे रुका तुम हो गये।

नाम लेते है तुम्हारा, क्यों बेका तुम हो गये ?

चल रहा इक लाश बन कर, पत्थर हैं तेरी आँखें।

किसको पुकारें जहाँ में, तेरे बिन सूनी आँखें।

हम सदा रोते रहेंगे, गम जुदाई का सहेंगे।

तू मुझे पहचानना ना, तेरे दर पर ही मरेंगे।

याद तुझको कर रहा हूँ, सुपनों में भी खो रहा हूँ।

तुम गये मुझसे बिछुड़ क्यों, जिन्दगी में रो रहा हूँ।

देखते ही देखते सब, मिट गया जीवन हमारा।

देखते ही रह गई यह, आँख पर तू नाहि हारा। जिन्दगी को पार करते, किस मुंका पर आ गये हैं ?

रो रही कविता हमारी, अब हमी घबरा रहे हैं।

तुम बने रहना ही निष्ठुर, अपनी जिद नहीं छोड़ना।

रोती फिरती हैं आँखें, आँखें उठा ना देखना।

रोई आँखें इन्तजार कर, नहीं पसीजा दिल तेरा।

कैसे दिल ढाढस दिलायें, सासों में सुमरन तेरा।

BAAT NEHARUN..

अपनी-अपनी उलझन मन की, अपने-अपने सपने है।

पागल मनुआ खोज रहा क्या, जीवन यह एक दर्शन है।

इस पथ पर चल रहे निरन्तर, अन्तहीन यह लहरे हैं।

हँसते गाते इस झिलमिल में, डूब सके वह सुन्दर हैं।

हाय जगत की रचना कैसी, भुला नहीं पाता निज को।

अविरल आंसू की गंगा में, देखूँ किस किसके मुख को।

तोला बहुत जगत को तोला, फिर भी तोल नहीं पाया।

ढलती फिरती इस छाया में, निज से ही मैं भरमाया।

उठती गिरती लहरों से मैं, सदा-सदा ही टकराया।

जख्मी होता रहा सदा मैं, नहीं किनारा पा पाया।

हँसी यहाँ पर छिपते देखी, दुख घाटी के अन्दर।

हुए भीड़ में यहाँ अकेले, सबकी चाहत में अन्तर।

श्र)ा मेरी गई कहाँ पर, बता मुझे हे श्र)श्वर ?

सम्बल सारे टूट गये हैं, आंसू गिरते है झर-झर।

नियति यहाँ पर खेल खिलाती, आँखों का पानी खारा।

सुर से सुर जब मिले साथ में, वह जाती सुख की धारा।

मौन हुआ तू बैठा क्यों हैं, तड़प रही जगती सारी।

आंसूओं से भीगी यह धारती, जीवन ना हिम्मत हारी। 63

मन की पीड़ा दूर न होवे, यहाँ निहारुँ वहाँ निहारुँ।

हरि मैं तुमको कैसे पाऊँ, हरदम तेरी बाट निहारुँ।

बीत गया रो-रो कर जीवन, चलना भी अब लगता दूभर।

आन मिलो तुम प्रियतम मेरे, नयन गिराये आंसू झर-झर।

सृष्टि तेरी दास तेरे हम, थके यहाँ उ)ार करो तुम।

BY CHANDRA PRABHAKAR

बहते नीर चरण को धोये, बेड़ा पार करो प्रभु जी तुम।

राह दिखा दो हम अज्ञानी, जग में भटके अंखियां रोवे।

अन्धाकार में अंखियां डूबी, बिन तुम दीया कौन जलावे ?

मेरे केवट बन कर ईश्वर, पार लगा दो डूबे नैया।

नैनन आंसू लिये खड़े हैं, पास नहीं कुछ जगत रचैया।

जग के दन्श लगे हम रोवे, बीता जीवन तुमको खोवे।

प्यास लिये यह प्राण पुकारे, दया करो शरणा हम पावे।

भटकन मेरी दूर करो प्रभु, तुम चरणों में शीश नवावें।

उठे न नयना फिर ऊपर को, सदा इसी में लय हो जावे।

64

मेरे जीवन तुझे खोजते, आशा के हम रंग सजाते।

तेरी यादों में हम खोकर, हरपल अपने नीर बहाते।

हमें मिलो आ जाये सावन, फट जायें सब दुख के बादल।

जीया मेरा करता धाक-धाक, जग में डोलूं बन कर पागल।

करुणा के सागर मैं प्यासा, दिल भी मेरा रहे उदासा।

तुम मेरे हिय में बस जाओ, पलटे इस जीवन का पासा।

दाता तू सारे जग का है, फिर भी मेरी झोली खाली।

बिन तेरे कुछ भी न भावे, बीत रही सब राते काली।

तू रुठे ना जगह कहीं है, अंखियां रोवें पूछ रही हैं।

मेरे सर्जक हमें बता दो, हमको तो कुछ ज्ञान नहीं हैं।

करे अर्चना आता पानी, हम तो है पूरे अज्ञानी।

लाज हमारी तुम रख लेना, तुमसे बड़ा न कोई दानी। सुधि-बुधि खो दूँ तुझ यादों में, जनम-जनम की प्यास हमारी।

मिट जाऊँ होऊँ बड़ भागी, बढ़ा इसे मैं तुझ पर बारी।

BAAT NEHARUN..

हरपल तेरी बाट निहारें, रुके न अंखियां नीर बहावे।

बने हाय तुम क्यों निर्मोही, जीया तरस-तरस यह जावे।

हमें मिलो प्रियतम बिछुड़ो ना, हार गये चाहें कुछ भी ना।

मिल जाये तुझ चरण धूल बस, बहते आंसू तुम देखो ना।

नमन करो स्वीकार हमारा, बहती यह आंसू की धारा।

नहीं और कुछ पास हमारे, तू ही सबका खेवन हारा।

65

तू इस पल को जी ले मनुआ, कल क्या होगा ना हम जाने।

यहाँ बदलती रंग यह दुनिया, बह गाता जा तू दीवाने।

सुख-दुख की होली यहाँ जले, इन अँखियों से है नीर ढले।

गा चुभन मिटे कुछ इस दिल की, जाते जीवन की शाम ढले।

रंग लेकर हम आशाओं के, हरपल हैं हम बढ़ते जाते।

हम उलझ-उलझ कर झुंझलाते, पर ना उससे रस्ता पाते।

सहज बहो निज में डूबो, जगती का कर अवलोकन लो।

फैली पीड़ा की चादर जो, कुछ खुशियाँ उसमें तुम भर दो।

जो मीत हुए दुश्मन बनते, दुश्मन भी मीत यहाँ बनते।

क्या खोज रहा पागल मनुआ, निज चाहत में हैं सब मरते।

बढ़ता जा गाता जा प्रभु गुन, जाता जीवन का है हर पल।

सब ओर वही है डोल रहा, यह सब है सागर की हलचल।

यह लहर उठे फिर लहर गिरे, यह सब उसकी ही लीला है।

कर्ता हम बने हुए इसके, यह ही जीवन की पीड़ा है।

हमसे ना कोई पूछ रहा, अँखियों में सागर डोल रहा।

यह चुभन मिटे दिल की कैसे, सागर निज से ही खेल रहा।

BY CHANDRA PRABHAKAR

कर्मों के बन्धान में बंधाकर, बोझिल हम होते जाते हैं।

पर पीड़ा से अनजान हुए, निज पीड़ा कहते जाते हैं।

है सृष्टि रचियता पथ दे दो, सद् मारग पर बढ़ता जाऊँ।

छोटे से इस जीवन को जी, तुझ चरणों में मैं आ जाऊ 66

तुम बिन मेरा मन्दिर सूना, हरि हिय में बस जाओ।

रोवे दिल का कोना-कोना, आ कर इसे सजाओ।

बाट निहारुँ तू नहिं आवे, कैसे मन समझाऊँ ?

जनम-जनम से दास तुम्हारा, िर भी नीर बहाऊँ।

जग के सब सुख ीके लागे, कैसे तुमको पाऊँ ?

हार गया चल-चल कर हे हरि, हरपल तुझे मनाऊँ।

तुम बिन मुझको यहाँ नहीं कुछ, सभी जगह अंधियारा।

नहीं सजा दो मुझको ऐसी, ज्ञान यहां सब हारा।

जगपालक कृपा के सागर, तेरी शरणा आऊँ।

हरपल नीर बहायें अंखियां, बाट निहारुँ पाऊँ।

भूलूं तुमको पाकर प्रभु जी, कभी दर्द था पाया।

छला गया मैं हाय जगत में, रही भुलाती माया।

मिटे प्यास जीवन की तब सब, अपना हाथ बढ़ाये।

प्रीति बढ़े हिय में सुख उपजे, नयन ूल बरसाये।

67

तेरी चौखठ पड़ा रहूँ मैं, बीत जाय जीवन की केरी।

रोती अँखियां ना पूछा क्यों, तूने भी क्यों आँखें ेरी ?

भटकूँ हाय तेरी दुनिया में, नहीं किनारा कोई पाता।

रो-रो कर यह मनुआ पागल, पूछ रहा क्यों हाय भुलाता ?

BAAT NEHARUN..

जले शमा और रोशन तू है, मिटे पतंगा खेल यही है।

मिटूँ डरुँ न इसी खेल में, वर दे जीवन यह अर्पित है।

नियति मुझे है खेल खिलाती, पल-पल में मुझको भटकाती।

हटा न देना दरवाजे से, अँखियां झर-झर नीर गिराती।

खोज-खोज कर तुमको हारा, जीवन भी कर रहा किनारा।

कहाँ जायेंगे पता नहीं है, प्यार तेरा बस एक सहारा।

कितने आये चले गये हैं, तेरा खेल हुआ न पूरा।

रोती अँखियां ढूंढ रही क्या, नहीं पता है मतलब तेरा।

जग को सुन्दर खूब बनाया, प्रलोभन भी खूब फैलाया।

मेरा क्यों सम्मोहन टूटा, फिर भी मैं ना तुझको पाया। 68

ईश कृपा करना तुम हम पर, बन सकें तुम्हारे हम सेवक।

चाहत तेरी में राजी हो, डरता यह दिल करता धाक-धाक।

सृष्टि रचैया बन्शी बाजे, नाचे यह ब्रह्माण्ड सारा।

कैसे तुझे रिझाऊँ बोलो, जानू ना पथ मैं तो हारा।

तुझ करुणा का प्यासा हूँ मैं, रो-रो कर बस रह जाता हूँ।

पार लगा दो मेरी नौका, द्वार पड़ा मैं घबराता हूँ।

कौन सुनेगा तुम न सुनोगे, अँखियां रोती तुझे पुकारें।

मेरे सर्जक तुम नहीं रुठो, ना ही पायें बिना सहारे।

पथ तेरे पर चलते जायें, आंसू झर-झर झरते जायें।

नाम तुम्हारा हो इस घट में, नहीं मौत से हम घबरायें।

तेरी यादों में ही खोकर, बीते मेरा जीवन सारा।

नहीं और कुछ मुझे सुहावे, बस तू ही है मेरा प्यारा।

भटकूं जग में मुझे थामना, ईश्वर मेरी यही कामना।

BY CHANDRA PRABHAKAR

ज्ञान दीप दर्शा दो मुझको, अंधियारे से करुँ सामना।

हर सांस जीवन की दे दूँ, प्यार मैं तुझसे ही करता।

तेरी मुस्काहट के पीछे, जिन्दगी कुर्बान करता।

तू नाहिं जाना छोड़ मुझको, इस विराने में रुला कर।

नाहिं मेरी कोई आशा, आँख टिकती है तुझी पर।

इस जिन्दगी में साथ देना, है सफ़र लम्बा यहाँ पर।

इस जिन्दगी की हर चुभन में, प्यार देना हर कदम पर।

आँख में आंसू मैं देखूँ, दुख रहे भूलू न हटकर।

सब सफ़र कट जायेगा यह, प्यार के गीतों को सुनकर।

जब-जब बहे यह नीर मेरे, प्यार के दो शब्द देना।

मैं गिर पड़ू जब भी धारा पर, कर बढ़ाकर थाम लेना।

प्यासा हूँ आँखों में देखूँ, है प्यास यह मिटती नहीं।

तुम जिन्दगी हो बन्दगी हो, क्या कहूँ सब कुछ तुम्हीं।

सब छोड़ ही मुझको गये है, इस जिन्दगी के मोड़ पर।

नहीं विलग तू मुझसे होना, चल ही चले उस ठौर पर।

नीर बह रहे कैसे पोंछू, सामर्थ नहीं इन हाथों में।

जीवन ने भी क्या खेल किया, दे दी कड़वाहट सांसों में।

मुस्कायें या हम रोयें भी, जीवन बस एक पहेली है।

गिन-गिन तारे रैना बीती, नहीं खत्म हुई कहानी है।

अपनी चाहत से चले सभी, किसको कैसे हम समझाये ?

स्वास्थ्य का जब तक मेल यहाँ, तब तक ही मिलना हो पाये।

अन्तहीन न दिखे किनारा, चाहूँ उडू नहीं उड़ पावे।

BAAT NEHARUN..

किस बन्धान में पड़ा हाय यह, सुधि बिसरा अमृत न पीवे।

तुमने हमें दिया दुख या सुख, शिकवे सारे भूल चुके हैं।

प्यासा रहा रहूँगा प्यासा, धूमिल सब अरमान हुए हैं।

पथ है दुर्गम फिर भी बढ़ता, नित नई-नई ले आशायें।

जीवन नदिया इस विराट में, पता नहीं कब लय हो जाये।

हँस सके तुम्हारे साथ न हम, कैसा विधि ने खेल किया।

मजबूरी के चक्र फांस में, फंसकर जीवन सब काट दिया।

सोंच-सोंच दिन रैना काटे, फिर भी सोंच न मन का जाये।

कैसी बतियाँ करुँ प्रभु जी, यह मन तुझमे रमता जाये।

छला स्वयं और छला सभी को, कैसा तूने खेल रचाया ?

जन्म-मरण के फंसे जाल में, तुझमें मैं क्यों रम ना पाया।

ले चल मुझे भुलावा देकर, मेरे मन तू धीरे-धीरे।

इस क्षण भंगुर जीवन में मैं, बहलाऊ मन धीरे-धीरे।

सुख-दुख की झिलमिल छाया में, नाच रहा है यह जग सारा।

अपने मन को बहलाने को, ढूंढ रहे है सब इक तारा।

सुर अपना बेसुरा न कर तू, गा ले प्रेम गीत का नगमा।

आनी-जानी इस दुनिया में, खेल-खेल ले जीवन सपना।

प्रतिपल हम मैं पोषित करते, ना जान सके इस मैं को हम।

रोए हम जी भर कर रोए, ना विलग हुए जीवन में हम। कितने असहाय यहाँ है हम, फिर भी हम है चलते जाते।

नश्वर जीवन की कथा लिये, नित सपनों में खोए रहते।

इस आँख मिचौनी छाया को, ना जान सके पहचान सके।

इच्छाओं की गठरी लेकर, न ईश्वर तुझको जान सके।

BY CHANDRA PRABHAKAR

गाना चाहा पर गा न सका, क्यों सुर मेरा अवरु) हुआ।

खोजा तुझको ना खोज सका, क्यों यह जीवन बैचेन हुआ ?

चलने की भी सामर्थ नहीं, क्यों राह निहारुँ तेरी प्रभु ?

दीदार नहीं तो प्रभु तेरा, चिरनिद्रा को आने दो प्रभु।

पूंछे किससे नहिं कोई पता, तुझ चरणों तक कैसे आऊँ।

रो-रो अँखियां यह सूख गई, अब नीर कहाँ से मैं लाऊँ ?

72

हम जायेंगे कित नहीं पता, दीखे न कोई किनारा है।

कैसे हम मन को समझाये, इस गम ने हमको मारा है।

गीतों में पीड़ छुपी मेरी, सुन कर इसको तुम मत रोना।

यह दर्द छिपा अन्तस्थल में, मैं पा न सका तेरा कोना।

बह रहे यहाँ बह जायेंगे, ना अता पता हम कुछ जाने।

हे ईश क्षमा हमको करना, हम विवश यहाँ है दीवाने।

सूनी आँखों में तुम झांको, समझा दो जीवन का मतलब।

हरपल यह बीता जाता है, कैसे पाऊँ मैं तुमको रब।

गीतों को किसे सुनाएँ हम, जख्मों को किसे दिखाएँ हम।

टूटी नौका गहरा सागर, कैसे यह पार करेंगे हम।

बरसात बरसती आंखों से, सागर में वह है खो जाती।

किस चाहत में मन डोल रहा, यह समझ नहीं मुझको आती।

लहरों में बहता बन अनाथ, बस इधार-उधार मैं टकराता।

पग-पग पर मुझको दंश लगे, किन आशाओं को ले जीता ?

हूँ अनन्त पथ का राही, न छोर कोई हम जान सके।

कैसे समझायें इस मन को, ना नीर हमारे सूख सके।

हे ईश कृपा करना हम पर, हम नाच रहे इंगित पर।

हमको ठुकरा तुम मत देना, कहती अँखियां यह रो-रो कर। 73

गीत उठता है हृदय से, क्यों नहीं सुनते हो तुम ?

अश्रु से यह यह आँख भीगी, क्यों बन्द करते आँख तुम ?

मैं यहाँ अनजान हूंगा, सब सहारे भी क्षणिक है।

हम कहाँ जायें बता दो, कौन सी धुन में मगन है ?

सब करे परिक्रमा तेरी, हाथ तू आता नहीं हैं।

नाचती यह सृष्टि सारी, रहस्य न पता कोई है।

कौन रोता भूख से है, कौन वैभव को समेटे ?

देखता सब ओर तू है, क्यों छिपा दामन समेटे ?

दिल नहीं लगता यहां पर, जाय भी तो हम कहाँ पर ?

ठौर कोई भी न पाता, यह रुदन खोता कहाँ पर ?

प्यास में जब धारा तपती, जीव अकुलाते यहां पर।

मेघ बनकर तू बरसता, गीत उठते िर धारा पर।

तुम सृजनकर्ता जग के, तुम्ही पालन कर रहे हो।

मुझे ले लो तुम शरण में, सुख-दुखों के पार तुम हो।

प्यार के दो गीत गाऊँ, तुझी में मैं दिल लगाऊँ।

दे मुझे वरदान ऐसा, मैं तुझी में डूब जाऊँ।

74

अँखियां नीर भरे पल-पल में, तुमको मैं ना पाऊँ।

बिछुड़ गये तुम क्यों मुझसे, कैसे मन समझाऊँ।

निराकार आकार बने तुम, यह आँखें पथराई।

बने भिखारी चाहत में ंस, क्षमा करो हे साांई।

चक्र तेरा चलता है हरपल, बच पाता ना कोई।

छिपी कौन सी खशबू तुझमें, भटक रहा हर कोई।

लिखी भाग में ठोकर हमको, नयन रोये न देखें।

क्षमा करो हे करुणाकर तुम, युग बीते बिन देखें। पूछता हे नाथ मैं तुमसे, पाऊँ तुमको कैसे ?

अन्धाी गलियों में भटके हैं, सूखा सावन जैसे।

खाक छानते इधार-उधार की, अँखियां राह निहारे।

रहे रजा में राजी तेरे, साहस कभी न हारें।

काट सके जीवन का रस्ता, दिल में तुझे बसाये।

मुझे न दूर करो निज से तुम, आये सांस न आये।

प्रियतम से प्रीति करुं कैसे, चाहा मिलना पर नहीं मिला।

है प्राण कंठ पर अब मेरे, जीवन से भी अब नहीं गिला।

तुम साथ नहीं मेरे प्रियतम, कैसा जीवन बदरंग हुआ है।

दिल धाक-धाक मेरा करता हैं, नहीं जोर किसी पर चलता है।

थकता हूं थकता जाऊं मैं, दिल को कैसे समझाऊं मै?

निज को मैं छलता जाऊ क्यों, पीड़ा यह किसे दिखाऊं मैं?

दिन-रात सताते हो मुझको, अपने मन की घुण्डी खोलो।

अब और न मुझको तड़ाओ, कुछ तो बोलो निष्ठुर बोलो।

साथ निभा देना जीवन में, तुम बिन जीवन नीरस जीवन।

प्यार की रीति न जान सका, शिकवे करते बीता जीवन।

आंसू की भेंट चढ़ाऊं मैं, कैसे मैं प्रीति निभाऊं यह ?

मैं नियति समझ ना पाऊं क्यों, बोझिल मन गीत सुनाऊं यह।

ना शान्ति करो भंग अपनी तुम, अपने दिल में दुख ना घोलो।

हाथ जोड़ कर करुं अर्चना, अंखिया खोलो मुख से बोलो।

मेरे गीत सुनोगे तुम क्या, व्यथा भरी है दर्द भरा है।

बना हुआ दीवाना फिरता, नहीं ठिकाना कोई भी है।

गिर-गिर कर उठ ना पाऊं मैं, कुछ मुंह से ना कह पाऊं मैं।

कैसे प्रियतम को बहलाऊं, इस जीवन को भटकाऊं मैं।

सुन्दर सी तेरी आंखों में, झांक रहा कुछ कर ना पाता।

हुआ विवश कैसा मैं हे प्रभु, दर्द बटा ना अपना पाता।

कैसे जीवन कुंजी आये, पर मैं भटक रहा क्या बोलूं ?

जीवन को आकाश दिखा दूं, मचले अरमा मैं क्या बोलूँ ?

मैं चीखू या चिल्लाऊं, कैसे मैं तुझे मनाऊं ?

वह दीप कहां से लाऊं, गीतों से तुझे रिझाऊं। जीवन।

इस क्षण लगता हमको उदास, बहती नदिया बहता जीवन।

अपनी पीड़ा समझ सके ना, सारी पृथ्वी रही नृत्य कर।

प्रेम पगी इस वीणा के स्वर, इस उदास मन को मैं लेकर।

कैसे मैं नाच दिखाऊं, सुर कैसे हाय उठाऊं ?

जीवन में ना बह पाऊं, हर पल मैं घुटता जाऊं।

हूक उठ रही मन के अन्दर, इसकी पीड़ा समझ सके ना।

फंस अपने ताने-बाने में, इस जीवन में निकल सके ना।

ज्ञान-ध्यान तुम बांट रहे सब, फिर भी मूरख कहलाता हूँ।

धाधाक रही जो पीड़ा अन्दर, जलता निशदिन मैं रहता हूँ।

कैसे मैं धौर्य बंधाऊ, मैं तुमको खोज न पाऊं।

मैं मार्ग न कोई पाऊं, मैं हाय उलझता जाऊं।

BAAT NEHARUN..

दिल कांप रहा थर-थर मेरा, प्यार के गीत सुना तुम दो।

मत गिनो नीर के आंसू तुम, बहते है उनको बहने दो।

अब और रुलाओं मत मुझको, प्रेम की गंग बहादो तुम।

रोया हूं बहुत इस जीवन में, तड़ाओं नहीं अब मुझको तुम।

लाऊँ कहां से सुर बोलो, जिनको सुनकर अंखिया खोलो।

मेरी मंजिल मुझसे रुठी, मैं जाऊं कहां पर तुम बोलो ?

मिट सकूं तुम्हारी यादों में, बस सम्बल मुझको इतना दो।

मन भाग रहा तेरे पीछे, इस खेल में इसको मिटने दो।

इस जीवन से खिलवाड़ किया, तुझको ना मैं पहचान सका।

लड़ा सदा ही इस जीवन से, कठपुतली बन ना नाच सका।

जीवन में खा कर चोटों को, मैं कैसे हसूं यह तुम बोलो।

जीवन की नदिया सूख गई, मेरे जीवन में रस घोलो।

देखा न तुझे इस जीवन में, जी भर रोया ना जान सका।

क्या खेल रहे हो तुम मुझसे, तेरे दिल में ना समा सका।

जो कुछ सीखा समझा हमने, छल अपने से हम करते हैं।

अपनी छोटी बुि) से ही, हम तोलते सारे जग को हैं।

सुर कैसे बजे यह तुम बोलो, जिनको सुनकर अंखिया खोलो।

जो प्रेम के गीत सुनाऊं मैं, ऐसा जीवन में रस घोलो। हो सकूं समर्पित मैं तुमको, तुम दोगे मिटा तो धान्यवाद।

कर सकें तुम्हारा अभिनन्दन, बस धान्यवाद, बस धान्यवाद।

जीवन दीपक यह जलता क्यों, इस तम में मैं रोता हूं क्यों?

तुझे रिझा ना पाऊं मैं क्यों, खो ना पाऊं मैं तुझमें क्यों?

खो जाऊं मैं तुझ में बोलो, कुछ तो सुन लो अंखिया खोलो।

आस अधूरी है क्या बोलूं, कहूं क्या सुन अंखिया खोलो।

BY CHANDRA PRABHAKAR

BAAT NEHARUN..

तेरे मन की सरगम छेडूं, तू ही बता दे क्या गाऊं मैं ?

तू भी मेरी बात न बूझे, तू ही बता दे कित जाऊं मैं ?

हम रोते है तुम सोते हो, ऐसा न जुल्म करो हम पर।

तेरी ही इस खामोशी पर, हंसता है सारा जग मुझ पर।

मुझसे रुठे तुम क्यों बोलो, प्रेम सिखा दे कुछ तो बोलो।

जीवन का आनन्द तुम्ही हो, निष्ठुर प्रियतम कुछ तो बोलो।

भूखा रोया मैं चिल्लाया, जब जन्मा मैं इस धारती पर।

ना भूख मिटी मेरी जग में, कृपा करो प्रभु तुम मुझ पर।

नहीं मार्ग मिला इस जग में, मैं शरण तिहारी आया हूँ।

रख चरणों में मस्तक तेरे, मैं इसे मिटाने आया हूँ।

वह भाग्य कहां से लाऊं मैं, जिनको सुनकर अंखिया खोलों।

मन तो तेरी करे प्रतीक्षा, मैं भी बोलूं तुम भी बोलो।

आये यहां क्यों, लक्ष्य नहीं जब, यहां भटकते रहते हैं क्यों?

इस अंधियारे में ओ निष्ठुर, प्रेम की तान सुनाता ना क्यों?

ढूंढ-ढूंढ कर तुमको हारा, अपनी किस्मत से भी हारा।

तुम आओ या ना आओ, टूट चुका यह जीवन सारा।

ढूंढे कहां पकड़ ना बोलो, मिटे तुम्हीं पर अंखिया खोलो।

जीवन अंतिम आस यह बोलो, छेडेंगे धुन अंखियां खोलो।

जीवन में जो ूल बिखेरे, मैं प्रतिदान न कुछ दे पाया।

रहा उलझता कांटो में मैं, जीवन का सौन्दर्य न पाया।

मैं पिंजड़े का पंछी प्रियतम, तुम अनन्त के स्वामी हो प्रभु।

दो नीर अश्रु स्वीकार करो, नीरस घट ले रिता मैं प्रभु।

साथ निभा जीवन का बोलो, प्यारे प्रियतम अंखियां खोलो।

BY CHANDRA PRABHAKAR

टूटी वीणा के स्वर बोलों, िर गीत उठे अंखियां खोलो।

लौटा देना ना तुम मुझको, अन्तिम जीवन आस यही है।

खो जाऊँ तेरे चरणों में, जीवन की बस चाह यही है।

उपदेशक जग में बहुतेरे, बाट रहे जो अपना अनुभव।

मैं मन्दबुि) अज्ञान लिये, रोता हूँ बस मैं ऽवक-ऽवक।

चरण धूलि में बस जाने दो, प्रीति न तोड़ो अंखियां खोलो।

ज्ञान तराजू से ना तोलो, मैं रोता हूँ कुछ तो बोलो।

कभी आँख से बहता पानी, रुदन कभी प्यारा लगता है।

मुझसे क्या तुम मेल करोगे, पास नहीं कुछ देने को है।

कृपा करो हे कृपा सिन्धु, नौका मेरी तुम पार करो।

जो भटक रही भटकन में है, उस पर तुम अपनी दया करो।

मैं तुझे रिझा ना पाऊँ, क्यों मिटना चाहूँ तुझमे बोलो।

मुझको उबार रस्ता दे दो, कर दया दृष्टि अंखियां खोलो।

दुख आये सह तप मन समझो, गति मत खोना चलना हमको।

इस जीवन के रंग अनेकों, खुली आंख से देखो सबको।

रंग बदलती इस दुनिया में, सुबह-शाम कभी िर रात है।

क्यों इतना बैचेन हो रहा, जीवन ढलता नहीं हाथ है।

हर पल जाते खोते यह पल, बैचेन न हो हरि गुण गा ले।

नश्वर जग से प्रीति न करनी, समझ सके तो दिल समझा ले।

छाया है घनघोर अन्धोरा, हरि बिन गति नहीं कुछ भी करले।

जोड़ उसी से पथ वह ही दें, जग से टूटे आंसू हर ले।

हर पल गीत उसी के गा ले, इस मन को पगले समझा ले।

बीतेंगे जीवन के यह पल, छोड़ शिकायत उसमें रम ले।

इतने जीव हैं यहाँ दीखते, सबके कर्म अलग हैं दिखते।

किस किसका हम लेंगे लेखा, धान्य वही जो हरि को भजते।

डूब उसी में डूब रहा सब, विचलित मन को तू समझा ले।

जो भी उसमें डूब गया है, उसकी बात पूछ रस पी ले। 78

पल दो पल की खुशी चाहते, हम भटके पर ना खुशी मिली।

अँखियाँ भी नीर बहा हारी, मैं मुरझाई ना हाय खिली।

छोटा सा दिल सिसकी इतनी, निष्ठुर आँखे तूने मीची।

सब ही मिट जाना दुनिया में, हंस हमें देख ना हो नीची।

कह-कह अपनी सभी कहानी, विदा हो रहे हैं इस जग में।

क्यों बेचैन हो रहा मन तू, बहा जा रहा सब नदिया में।

खोज यहाँ क्या लेकर फिरते, जान नहीं पाये जग अन्दर।

लिये प्यार की भूख घूमते, बनो न निष्ठुर मेरे प्रियवर।

सूरज देता हर दिन प्रकाश, बुझती जाती मेरी आशा।

दो शब्द प्यार के जो बोलो, ढूंढू दिल का टूटा शीशा।

कुछ ना कहते यह दर्द बहे, चाहा प्यार से कोई कहे।

बेबस मनुआ हरदम रोये, आखिर यह कितना दर्द सहे।

79

अन्धाकार से जी घबराये, याद हरी को कर लेना।

अपनों से जब मिले का ना, उसका दीप जला देना।

हरी ही खेल रहा जगत में, किसको कहता भला बुरा।

ना भूल जगत में चलता जा, जप उसको ना जिया चुरा।

रंग अनेकों इस दुनिया में, कौन रंग से सकुन मिले।

झांक-झांक अपने अन्तस में, राम तुझे हैं वही मिले।

पाप पुण्य कर्मों की रेखा, कैसे इसको पार करें।

हरी भजन बिन चैन मिले ना, झर-झर अंखियां नीर गिरे।

कहो बुरा ना यहाँ किसी को, यहाँ हरी ही खेल रहा।

मगन हो हरी जाप करे जो, छोड़ किनारे वही बहा।

करो विनय प्रभु बालक हैं हम, अपनी ममता हमें दिखा।

अज्ञानी गिरते हैं आंसू, मात-पिता हरि तुही सखा। 80

निर्बल का न कोई यहाँ पर, निर्बल का बल वह ही रामा।

चाहें मारे और जिलावे, जाना हमको उसके धामा।

किससे करे शिकायत मनुआ, हारी रो-रो कर यह अंखियां।

उसको अपने हृदय बसा ले, तपती धूप मिले तब छैंया।

जीवन का आनन्द खोज ले, शाश्वत है तू उसको भज ले।

कुछ क्षण रहना है बस बाकी, जायेंगे पल धीरज धार ले।

भाग कहीं पर नहीं ठिकाना, प्रीति लगा ले हरि घर जाना।

हरि-हरि करते कर्म किये जा, जान हरी में सभी समाना।

प्रीति किये बिन चैन मिले ना, नहीं कटे यह काली रैना।

मृगमरीचिका के आंगन में, नहीं सुने हम उसके बैना।

चलता जा पर भूल न उसको, उसी धुरी पर पहियां घूमें।

धान्य हुए वह इस दुनिया में, देखें सदा उसे ही चूमें।

81

पिव-पिव रटे पिया ना दीखे, क्यों हम इस जग में फिर आये।

गा-गा मन यह होता पागल, नयना हर दम झड़ी लगाये।

माना कठिन डगर है लम्बी, बना हुआ तू क्यों निर्मोही।

रो-रो कर हम तुझे पुकारें, भूल न मुझको मेरे माही।

बीत रहे पल सब बीतेंगे, बिछुड़े तुमसे कभी मिलेंगे।

नीर नहीं नयनों के सूखे, आस लिये हैं दीप जलेंगे।

गा-गा कर बह ले दरिया में, नहीं किनारा इस सागर में।

बिन गाये ना चैन मिलेगा, सोंच समझ ले तू इस दिल में।

बह जाता पांडित्व सभी तब, जब होवे कांटों से जख्मी।

हरि कृपा को आँखें तरसे, राह तकें आंखे यह सहमी।

ले जायेगी लहरे तुझको, गीत उसी के तू गाता जा।

बीत रहा यह जग सुपना सा, हुआ समर्पित तू बहता जा। 82

सब रंगों के पार छिपा तू, नयना बाट निहारे हैं।

रो-रो अंखियां हार गई है, दिल मिलने को तरसे हैं।

बोझिल हो जाता जब जीवन, याद तुही बस आता है।

तू बोले चाहे ना बोले, तुम बिन जी घबराता है।

कैसे पाये हार गये हम, अज्ञानी हम बालक हैं।

चाह तेरी पायें झलक को, ;षी-मुनी सब ज्ञानी हैं।

इधार-उधार भागा प्रभु जी मैं, न ठिकाना तेरा पाया।

करो कृपा मैं चरण पड़ा हूँ, ढूंढू मैं तेरा साया।

कहीं नहीं मोहि कुछ भी दीखे, दिल बता मनायें कैसे ?

नजर नहीं तू मुझको आता, बीते ना रतिया ऐसें।

अनजानी डगर न किनारा, भीगी पलकें प्यार चहे।

तू रुठ न मुझसे निर्मोही, सुरति तुझी में सदा बहे।

83

नाम तुम्हारा लिये बिना मैं, चल पाऊँ ना इस दुनिया में।

BAAT NEHARUN..

कैसा खेल रचाया तूने, नीर नहीं सूखे आंखों में।

गिर-गिर कर हम चले यहाँ पर, ढूंढ रहे प्रभु जी पथ तेरा।

बीतेगीं कब काली रातें, आस लगी कब होय सबेरा।

सुख पाने की खातिर भटका, कहीं नहीं पर सुख को पाया।

हरपल तेरा नाम जपूँ बस, मिल जाये हरि तेरा साया।

हरि-हरि जपूँ बनो तुम खेवट, सागर लहराये डर लागे।

कृपा तुम्हारी मिल जाये प्रभु, सोया भाग्य यही फिर जागे।

सुधि तुम ले लो तुझे पुकारें, चला न जाता हम हैं हारे।

झर-झर नीर गिराती अंखियां, नहीं भूलो तुम प्राण प्यारे।

कितने बसन्त गये न आये, प्यास लगी वह कौन बुझाये।

मेरे जीवन के ओ रसिया, चाहूँ अब तू ना भरमाये। 84

हरि बिन सुमरे जीवन बीता, ना जीवन में उल्लास मिला।

गिर पड़े हरी के चरणों में, मिट जाती है फिर सभी गिला।

जग है अथाह सागर देखो, किस किसका तुम लोगे लेखा।

स्वर यहाँ उसी के गूँज रहे, तू देख नहीं क्या सब धोखा।

हरि गुण गाता जा चैन मिले, झर-झर अंखियों से नीर झरे।

कर्ता बनकर दुख पावे क्यों, डर लगे नहीं उसको सुमरे।

स्वर उठा उसी के सुःख मिले, हरि सुमरे उसके दुःख टले।

तू खुली आँख से देख यहाँ, बहता जाता है सब पगले।

किसको मतलब है समझ यहाँ, जो हमको कोई याद करे।

गिर जा तू हरि के चरणों में, तेरा बेड़ा वह पार करे।

पल दो पल का है खेल यहाँ, उसके घर जाना प्रीति लगा।

सब वैभव फीके पड़ जाते, तू सुरति उसी की हिया जगा।

BY CHANDRA PRABHAKAR

85

हरि भज-हरि भज-हरि भज पगले, मेला दो दिन का तू जप ले।

इन सांसों को हरि धुन दे दे, बह जायें किधार न पता चले।

सब शून्य बीच अंखियां देखे, कितने ही चाहत के लेखे।

कैसे पागल मन समझाऊँ, नयना रोये पथ को देखें।

जग के तुम नाथ रचैया हो, हम अबल नहीं लीला जाने।

हिचकोले खाती है नौका, तू पार लगा तुमको माने।

बहती नदी ले जाये किधार, मेरा बस अपना है कितना।

तू आँख खोलकर देख जरा, बहता जाता जीवन सुपना।

हरि हमें संभालो भटक रहे, आँखों में आंसू खोज रहे।

हर सांस जपे तुमको प्रियतम, चाहे नयनों में बसा रहे।

स्वीकार करो मेरी पूजा, तुम बिन लगता जीवन सूखा।

किरपा तुम्हारी बरसे जल, ना रह जाये जीवन रुखा। 86

खोज रहे राह को, डूब जायें सारे गम।

कुछ ना कहेंगे हम, तुम करो कितने सितम।

गुजर जाये जिन्दगी, कुछ ना हमको चाहिये।

संग चाहत यह बनी, खता न हमसे होइये।

याद हमें जो करे, किसको मतलब है यहाँ ?

नीर आँखों से झरे, मिटा गया मेरा जहाँ।

चलते हम जा रहे, नाम तुम्हारा ले रहे।

ना पता छिपा कहाँ, वहीं नहीं क्यों हम रहे।

अनजान राहें हैं यहाँ, देखूँ मैं कब तू आये ?

टूट जाता दिल यहाँ जब, ना चले बस नीर आयें।

यहाँ है किसकी प्रतीक्षा, जप ले मन नाम उसका।

नाम सुमरे बिन हरी का, बोझ हो पाये न हलका।

87

पूजा करते तुम्हारी, खिल सकूँ तुम बिन न माली।

ज्ञान का दीपक जला दो, नीर की बह रही नाली।

तुम्ही हो सर्जक मेरे, नाव को कर पार हारा।

रंग-बिरंगे इस जगत में, हर तरु तेरा नजारा।

वन्दना करें तुम्हारी, सकल जग का तू मही है।

अबल हम तुम सबल स्वामी, नीर अंखियों से झरे हैं।

छिप गये तुम छोड़ हमको, क्या रचाया खेल तुमने।

वासना मिटती नहीं है, देखते हम सदा सुपने।

पा रहे दुख भूल तुमको, बसो नैनन होय तब सुख।

कर कृपा जीवन रचैया, रो रहा ेरों नहीं मुख।

चल-चल कर मैं हूँ हारा, यूं नहीं मुझको उछालो।

नीर बहते ईश लख लो, नाथ तुम मुझको संभालो। 88

कोई ठगा जाता यहाँ, कोई ठगे है यहाँ।

झर रहे यह नीर मेरे, बिन कृपा लुटता जहाँ।

चरण रज हमको मिले तो, कर्म के बन्धान गिरें।

डूबूं दुनिया में तेरी, पार हम भव को करें।

रंग अनेकों हैं जगत में, हम भ्रमित हो घूमते।

पार पाया ना किसी ने, अश्रु यह ना सूखते।

हम बालक रो ही सकते, दया तेरी चाहते।

प्यार तेरा यदि मिले तो, कंट मग सब छोड़ते।

दीनबन्धु दयालु तू है, नहीं हमें विसारना।

जपते रहें हम तुझी को, रुदन को तुम समझना।

कुछ नहीं विधि नाथ जानूं, हाथ जोड़े बस खड़ा।

तुझ विरह की आग चाहूँ, भस्म होवे जीवड़ा।

89

दर्द तुमने जो दिये हैं, नहीं गुनाहगार हैं।

कर सको तो मफ़ करना, ना ही समझदार है।

चल रहे अनजान रस्ते, बीच हैं कांटे पड़े।

कैसे समझायें तुम्हें, देखते ना क्यों अड़े ?

इस अंधोरी रात में सब, दीप ले निज खोजते।

नीर से अंखियां भरी है, दर्द क्यों ना समझते ?

अबल हम तुम सबल स्वामी, पा सकें वह दम नहीं।

तुझ कृपा के ही भरोसे, मिलन होवेगा कहीं।

द्वार तेरे बैठ रो ले, क्या बता किस्मत नहीं।

फ़िर रहे हम तो भटकते, तू छिपा बैठा कहीं।

चाहते दीपक दिखा दे, पा सकें तेरा पता।

कर्म के बन्धान गिरें सब, मफ़ हो सारी खता। 90

पूजा तेरी करें प्रभु, तू खेवनहार है।

बिन तेरे मन भटकता, प्यार मिले चाह है।

बुन रहा ताने बाने, थका और रो रहा।

डगर मुझे तुम दिखा दो, भटक यह जीय रहा।

धारती पर बरस जाओ, फ़ूल खिल दे सुगन्धा।

नैन को लखो हमारे, कर्म के बहें बन्धा।

आओ तुम राम प्यारे, प्राण यह प्यासे हैं।

तुम्हारे बिना सूना, नयन नीर बहे हैं।

न लगे तेरे बिना दिल, न नजर ईश आते।

रो-रो कर प्राण मेरे, बुलाते प्रभु आते।

मेरे सर्जक न भूलो, कहाँ पर हम जाये ?

दिखा दो अपना पथ तुम, चरण रज हम पायें।

91

बीता जाता जीवन बसन्त, कोयल ने गीत सुनाया ना।

बहते रहे आँख के आँसू, पर प्यार तुम्हारा पाया ना।

बने रहे हो मुझ पर निष्ठुर, ऐसा तो क्या मैंने चाहा।

पीड़ा के जाम पिये हँसकर, दूँ दुख तुमको था ना चाहा।

मिलने को यह जियरा तड़पे, जाता जीवन तुमको तरसे।

ऐसा क्यों निष्ठुर खेल रचा, रिमझिम मेरे नैना बरसे।

अनजान डगर मिट जायें कब, जब उड़े राख आयेगा तब।

क्या करे शिकायत अब तुमसे, लिख दी किस्मत तूने जब रब।

प्रेम प्यास की प्यासी दुनिया, छले जा रहे इच्छा दरिया।

डूब रहे हम शोर मचाते, पार करें कैसे यह नैया।

तुम रुठे तो जीवन फीका, निज को मैंने तुममें देखा।

कैसे आग लगाऊँ निज को, टूटे सुपने तू ना देख 92

अपनी-अपनी इच्छायें ले, सब ही जीते हैं इस जग में।

कर न शिकायत इस दुनिया से, तब तक चल ताकत है पग में।

आंसू को पोंछ देख जग को, खिल-खिल मुर्झाते फूल यहाँ।

दो पल को झूम हवाओं में, सौरभ को अपने लुटा यहाँ।

जग में आये आँखे खोली, हम रोये दूधा पिला बोली।

चुप हो जा तू राजा मुन्ना, लगती जीवन में सच बोली।

प्यार बिना है जग में नहिं कुछ, लेते रहना बस इसकी सुधा।

जलो क्रोधा की ज्वाला में जब, मत खो देना तब अपनी सुधा।

पल दो पल का मेला जग में, मत वैर भाव हिय में रखना।

कुछ बीत गई कुछ बीतेगी, यह जीवन तो है इक सुपना।

बह जलधा बीच न कूल कोई, लहरें ना तेरी दुश्मन हैं।

सब नियति लिये अपनी-अपनी, भटकें आंखों में आंसू हैं।

93

खेल यह चलता रहेगा, दिल यहाँ जलता रहेगा।

हम हारे दिल की बाजी, नीर यह गिरता रहेगा।

पांव के घुंघरु हैं रुठे, न मिलो बीतेंगे यह दिन।

दर्द लिये जायेंगे हम, रो रही अंखियां सजन बिन।

रात हमको है डराती, याद पल-पल हमें आती।

हम विवश कितने हुए हैं, भूल तुमको मैं न पाती।

न सुनो है तेरी मर्जी, टूटी जाती यह चेरी।

होंठ पर तेरा तराना, जान लेना मैं तुम्हारी।

नैनों में छवि है तेरी, क्यों हुए निष्ठुर सजन तुम।

चाहें हमें भूल जाना, हम मिटेंगे याद ले गम।

अश्रु की नदी को देखो, कैसे झर-झर बह रही है।

डूबती जाती सजन मैं, राह अंखियां तक रही है। 94

बह रहे आंसू हमारे, न तुम्हारे हो सके।

साथ चलते फूल खिलते, वह गये न रुक सके।

कौन सा वह मोड़ आया, जो हुये मुझसे जुदा।

साथ चलने की कसम ली, रंगी सुपने थे सदा।

नीर आंखों के बरसते, हम तुझे याद करते।

क्यों हमें तुमने भुलाया, साथ तेरे महकते।

अब चला जाता नहीं, तुझको पाता नहीं।

रो कर हारी यह अंखियां, कूल भी मिलता नहीं।

हम तो भटकते ही रहे, नीर यह बहते रहे।

प्यार की दो बूंद पाने, को तरसते ही रहे।

गीत दुख के ही उठे, कुछ नहीं हमसे हुआ।

पीड़ा लहराई हवा में, खो गई बन कर धुंआ।

देखते ही देखते सब, कूल छूटे जा रहे।

किल है कोशिश हमारी, चाह संग तेरे बहे।

95

चलता प्रभु जी चला न जाता, करो कृपा तुम भाग्य विधाता।

नयना रोवे राह निहारें, मंगल दायक सुख के दाता।

प्यार दे दो दूर हो भटकन, बिन तेरे यह सूना उपवन।

झरते नीर निहारो मुझको, चरण तुम्हारे पड़ता भगवन।

कैसे पाऊँ मैं अज्ञानी, सारे जग का तू है दानी।

तेरी यादों में खो जाऊँ, भूल सकूँ मैं सकल कहानी।

भर-भर मेरी अंखियां आये, गाता सावन मुझे रुलाये।

कहाँ खो गये ओ निर्मोही, बिन पानी मछली तड़ाये।

तुम सर्जक न जाने लीला, प्यार हमको तेरा चीन्हा।

बने पुजारी तुझ मन्दिर के, जपे तुझे वर मोहि दीन्हा।

अगम अगोचर पार न तेरा, काली रातें करो सबेरा।

आंसू से चरणों को धो लूं, मिट जाये जीवन का घेरा। ९६

मन भूल जा मन भूल जा, तू अब शिकायत न करे।

गिर पड़े हरि चरण में जब, काहे जगत से तू डरे।

तू लहर बहाती नदिया, सभी तरु वह ही छलिया।

जोड़ अन्तस तार उससे, यह बहाती नीर अंखियां।

कुछ पलों का खेल तेरा, फिर लुटेगा तेरा डेरा।

गम न कर हरि प्रीति कर ले, होय जीवन में सबेरा।

जप हरी सब कष्ट मिटते, शूल भी सब फूल बनते।

सब जगह उसका नजारा, धान्य जो उसको सुमरते।

सूजी यह रोती अंखियां, हरि बिना मैं हाय टूटी।

हरि ही हरि यहाँ समझ ले, पी ले बस उसकी बूटी।

हरी सम्भालो दास को, विनती करुँ प्रभु जी यहीं।

दीप अन्तस का जगा दो, भूलूँ तुझे पल भर नहीं।

97

ईश तेरी हो कृपा जब, मिल सके तेरा ठिकाना।

प्यार तेरा चाहता हूँ, ना कभी तुम जुदा होना।

तुम बिना खुशियाँ नहीं हैं, तुम मिटा दो कष्ट सारे।

प्राण का प्यारा तुही है, रो रहे तुमको पुकारे।

नहीं पता गिर जायें कब, कुछ क्षणों का खेल है।

चल रहे हम बहकते प्रभु, तेरी दया की प्यास है।

सृष्टि तेरी गीत गाती, प्रभु दीनबन्धु दयालु तू।

नीर मेरे गिर रहे हैं, कर पार भव से ईश तू।

BAAT NEHARUN..

हम है बालक तू सृजक है, ना विलग हो चाहते।

शून्य में आंखें निहारें, नहीं रुला हम भटकते।

हम जपें तुझको प्रभु जी, यह नीर धोयें चरण को।

शीश अब उठना न चाहे, हम देखते हैं राह को। १४

भजते प्रभु को हम है, वह तो नाहिं कहते।

आँसू गिराते हम हैं, चोट जग की खाते।

प्रभु जो भक्ति करता, नश्वर में नाहिं रमता।

दिल में बसा कर प्रभु को, भव को पार करता।

दुनिया के रंग अनेकों, भक्ति रंग एक है।

लहरों सा बहे जग में, दिन दो का मेल है।

मन की है वासनायें, हमको घुमाती हैं।

पूरी यह हो न पाती, जी को रुलाती है।

मन को ना चैन मिलता, यहाँ अकुलावे हैं।

दुख में ना साथ कोई, हरि को बुलावें हैं।

कितना ही दौड़ ले हम, उस बिना सुख नाहीं।

उसकी कृपा के बिना, दीपक जले नाहीं।

डोरी उसी के हाथों, तू सच यह समझ ले।

कितनी है योनि जग में, जोर अपना लख ले।

जिसको बनाया जैसा, चले मर्जी उसकी।

थक कर तू गिरे जब भी, याद आवे उसकी।

जीवन में चैन चाहे, हरि को तू सुमर ले।

आंखों के नीर पगले, यादों में लुटा ले।

भक्ति की मिठास ऐसी, प्यार बढ़ता जावे।

BY CHANDRA PRABHAKAR

चाहें रहे वह ही बस, मैं को वह मिटावे।

नाचे जगत में वह ही, हम तो हैं खिलौने।

मृगमरीचिका में भटके, टूटते ना सुपने।

अन्तस में जोत जगती, उससे प्रीति बढ़ती।

प्यार की कहानी यही, चाँद चकोर लखती।

सुख-दुख की देन उसकी, सभी सुख को चाहें।

सुख नाहिं उसके बिना, उलझती है राहें।

यादों में उसकी मिटे, और क्या है जग में ?

कितने यहाँ है धाोखे, चैना मिले उसमें। अनहद में डूब पगले, जीते जी तू मर ले।

जानो न कोई तेरा, तू हरि को सुमर ले।

जाना यहाँ से सबको, कुछ पल के मेहमा।

प्रीति हो पतंगे जैसी, जलती रहती शमा।

दुख को भी हँसकर सहो, तप तेरा यही है।

भूलो तुम नाहिं हरि को, जाना तो वहीं है।

झिलमिल सी करे दुनिया, दो दिनों का मेला।

हरि को समर्पित हो जा, करो मन ना मैला।

99

यह बीत गया सारा जीवन, बीता ना वह पछतावा कर। हरि चरण नीर चढ़ा अपने, हरि नेह बढ़े तैयारी कर। खिलकर मुरझाते फूल यहाँ, क्यों रोता कुछ भी थिर न यहाँ। बिन भजन यहाँ जियरा भटके, इच्छाओं का अम्बार यहाँ।

ना चले यहाँ अपनी मर्जी, रोते रोते आँखे तरसी। पागल मन कैसे समझाऊँ, सूखी धारती तू न बरसी। हे राम बसो मेरे घट में, हारा मैं यहाँ खिलाड़ी हूँ। जो जीत हुई तेरी मर्जी, रज चरणा तेरी चाहूँ हूँ।

सांसें चलती तेरी मर्जी, दुख के तू पार लगाता है। तेरी यादों में डूब सके, वर दे मुझको हरि भाता है। इच्छाओं की होली जलती, मैं उलझ उलझ उसमें रोती। बेबस आँखे हो विवश यहाँ, तुमको ही बस है तकती।

दास तेरे हम हरि संभालो, जाता तन सब बेगाना है। जीवन होवे फल तभी यह, जुड़ जाये तुमसे नाता है।

100

कौन है पागल कौन स्याना, हरि नाहीं जिसने पहचाना। पागल प्रीति लगाये जग से, छूट रहा सब यहाँ ज़साना। धूप छावं का खेल यहाँ है, मत भूलो रब शान्ति वहाँ है। उस बिन चैन न आवे मन को, प्राणों की तो प्यास वहीं है। जिसने जपा स्वयं को छोड़ा, बहता नाचें हरि उस घर में। कौन करे अब उसके दर्शन, सुधा बुधा भूला खोया उसमें। हरि ही नाचे वही नचावे, भेद नहीं कोई भी जाने। मैं को भेद प्रीति में डूबे, बहे नीर बस उसे बखाने।

जप लो उसे और क्या जग में, बन बन टूट रहे हैं सुपने। इस जीवन का स्वामी वह ही, कितने चाहो देखो सुपने। जप हरि शान्ति सुधाा बरसाये, इस मन का वह मैल मिटाये। थके प्राण को चैन मिले तब, हरि लीला में लय हो जाये।

101

आ जाओ राम, छिप गये क्यों मेरे राम। बाट निहारूँ हरपल तेरी, सुधिा हमारी ले लो राम। सकल सृष्टि के तुम हो स्वामी, घट घट में बसे हो राम। मुझे नहीं ि़र भी तुम दीखो, जग में उलझा जिया राम।

झर झर नीर बहाये अंखियां, चैना न बिन तेरे राम। तुम कृपा बिन कष्ट मिटे नहीं, पीड़हर दुख भंजक राम। अंधियारे में कुछ न दीखे, दीप जला हमारे राम। अज्ञानी हूँ जान क्षमा कर, प्यार तेरा चाहूँ राम।

कितने बीते जनम न पायो, चौखठ पर न पहुँचो राम। सदा वासनाओं में उलझा, क्षमा कर दे मेरे राम। दूर कभी न मुझसे होना, दे मन्दिर का कोना राम। बीते यह जीवन की घड़ियां, करूँ पूजा तेरी राम।

तुम सारे जग के रखबाले, सुधिा हमारी ले लो राम। इस नौका को पार लगा दो, बनो खेवट मेरे राम। डर लागे यह रोवे जिवड़ा, मुख न ़ेरो मुझसे राम। मात पिता तुम सब कुछ मेरे, पीड़ कहते तुमसे राम।

राम नाम की ज्योति जले बस, प्रीति बढ़े तुझी से राम। कभी न भटकूँ मैं इस जग में, मिले सम्बल तेरा राम। व्याकुल मेरे प्राण पुकारे, मुझे भूल न मेरे राम। चरण पूं तुमसे यह चाहूँ, भक्ति का वर दे दे राम।

BAAT NEHARUN..

BY CHANDRA PRABHAKAR